INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

HANDWRITTEN NOTES

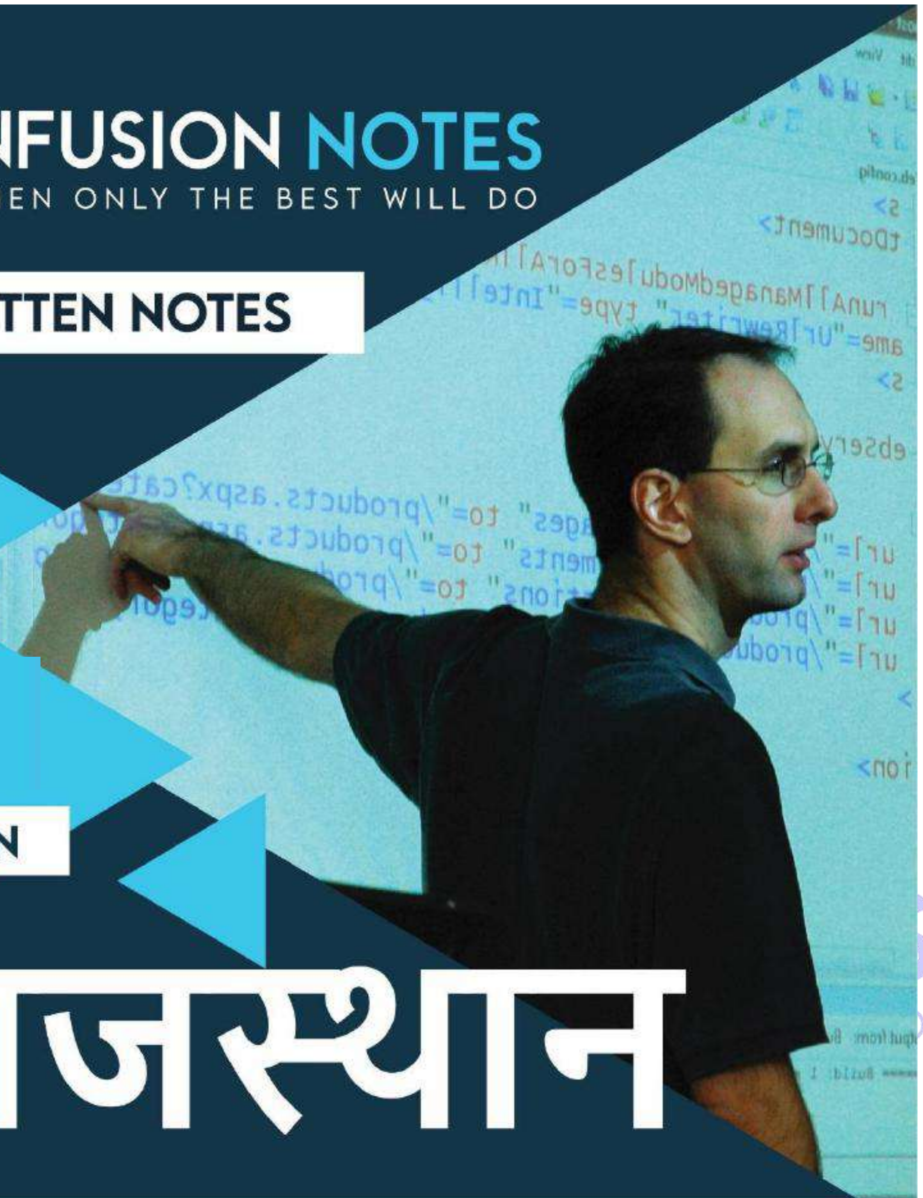

LATEST EDITION

# राजस्थान

# वरिष्ठ (Senior)

# कंप्यूटर अनुदेशक

[भाग -1] कला एवं संस्कृति + इतिहास +करंट अफेयर्स (राजस्थान) + शिक्षाशास्त्र

# कला एवं संस्कृति

1. राजस्थान में चित्रकला
2. लोकनृत्य एवं कला
3. संप्रदाय एवं लोक संत
4. लोक देवता और लोक देवियाँ
5. राजस्थान में हस्त शिल्प कला
6. मेले एवं त्यौहार
7. प्रमुख लोक संगीत
8. राजस्थान की बोलियाँ
9. राजस्थान का साहित्य
10. सामाजिक रीत रिवाज एवं प्रथाएँ
11. राजस्थान में ठिकाना व्यवस्था
12. वस्त्र एवं आभूषण ( पहनावे )
13. राजस्थान में जनजातियाँ

# राजस्थान इतिहास

1. राजस्थान इतिहास के स्त्रोत

2. राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएं

3. गुर्जर प्रतिहार वंश

4. मेवाड़ का इतिहास

5. मारवाड़ का इतिहास

6. राजस्थान के अन्य वंश

7. राजस्थान में मुगल राजवंश

8. राजस्थान की रियासतें और ब्रिटिश संधियां

9. 1857 की क्रांति

10. किसान एवं जनजाति आंदोलन

11. राजस्थान में प्रजामंडल

12. राजस्थान का एकीकरण

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

# राजस्थान का भूगोल

1. सामान्य परिचय
2. भू – आकृतिक प्रदेश
3. नदियां एवं झीलें
4. जलवायु
5. वनस्पति एवं वन्य जीव अभ्यारण्य , वन्यजीव एवं सरंक्षण
6. राजस्थान में मृदा
7. जनसंख्या
8. बेरोजगारी
9. गरीबी
10. राजस्थान में खनिज
11. पशु संसाधन
12. राजस्थान की कृषि
13. राजस्थान में उद्योग
14. प्रमुख परियोजनाएं –
    - मुख्य सिंचाई एवं नदी घाटी परियोजनायें

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO FREE SAMPLE

- मरुस्थल एवं बंजर भूमि के विकास के लिए परियोजनाएं

- राजस्थान समय सामयिकी (करंट अफेयर्स)

## शिक्षा शास्त्र (Pedagogy)

1. मनोविज्ञान – एक परिचय
2. वृद्धि एवं विकास की संकल्पना
3. अधिगम / सीखना/सिखाना
4. अधिगम में आने वाली कठिनाइयाँ
5. अभिरुचि , स्मृति
6. बालकों में चिन्तन
7. अभिप्रेरणा
8. बुद्धि
9. व्यक्तित्व
10. समावेशी शिक्षा
11. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या – 2005

12. नि : शुल्क व अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009

13. क्रियात्मक – अनुसन्धान

14. शिक्षण अधिगम

15. आंकलन, मापन मूल्यांकन

- सतत एवं समग्र मूल्यांकन

16. अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

17. प्रसिद्ध पुस्तकें व लेखक

FREE SAMPLE

नोट -

प्रिय छात्रों, Infusion Notes के राजस्थान वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक के sample notes आपको पीडीऍफ़ format में "फ्री" में दिए जा रहे हैं और complete Notes आपको Infusion Notes की website या (Amazon/Flipkart) से खरीदने होंगे जो कि आपको hardcopy यानि बुक फॉर्मेट में ही मिलेंगें, या नोट्स खरीदने के लिए हमारे नंबरों पर सीधे कॉल करें (9694804063, 8233195718, 8504091672) | किसी भी व्यक्ति को sample पीडीऍफ़ या complete Course की पीडीऍफ़ के लिए भुगतान नहीं करना है | अगर कोई ऐसा कर रहा है तो उसकी शिकायत हमारे Phone नंबर 9694804063, 8233195718, 0141-4045784 पर करें, उसके खिलाफ कानूनी कार्यवाई की जाएगी |

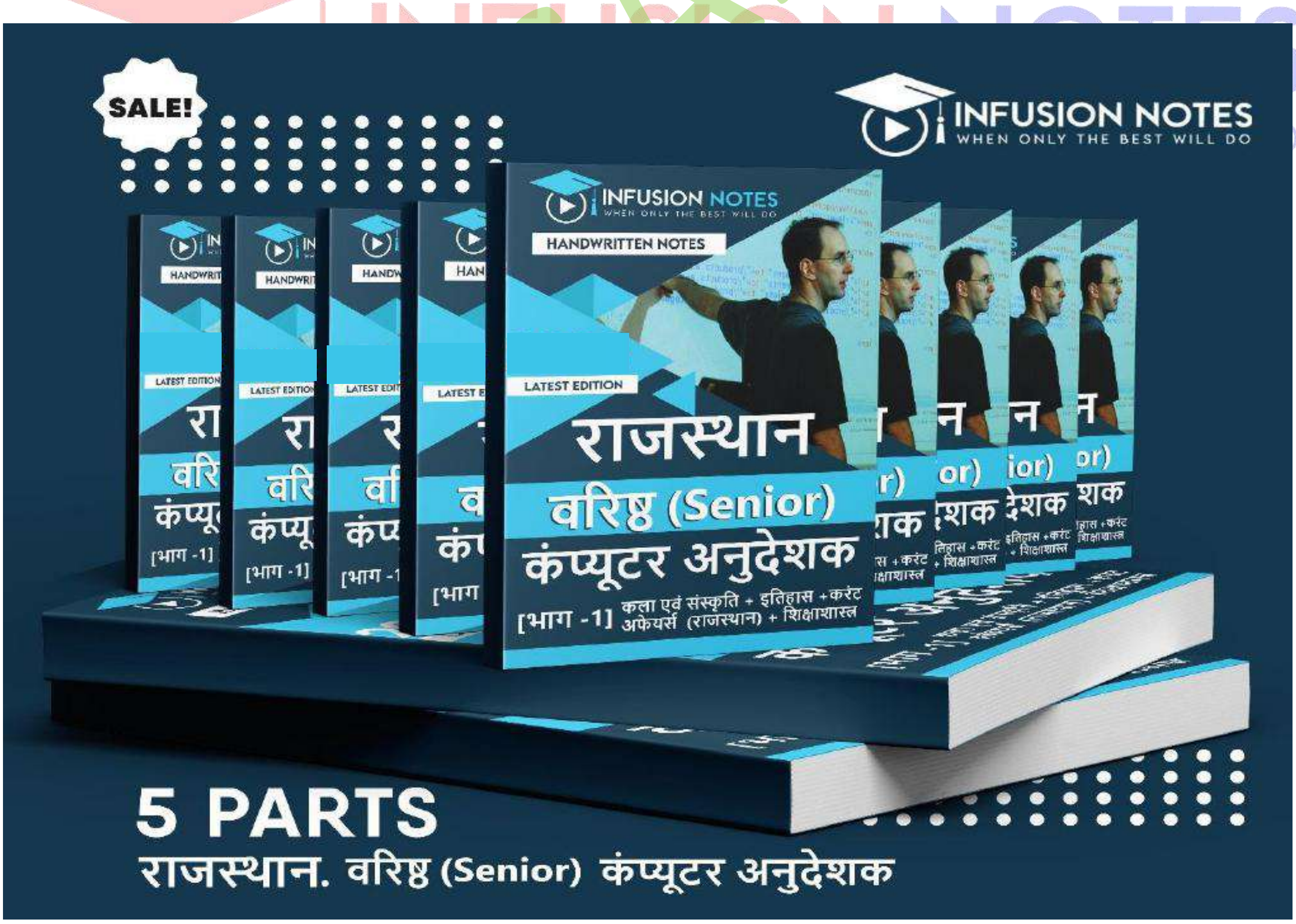

# अध्याय – 5

# लोक देवता और लोक देवियाँ

## लोक देवियाँ

राजस्थान के प्रमुख लोक देविया और देवता निम्नलिखित है -

### करणी माता

- बीकानेर के राठौड़ शासकों की कुलदेवी। 'चूहों वाली देवी' के नाम से विख्यात। जन्म सुआप गाँव के चारण परिवार में।
- मंदिर - देशनोक (बीकानेर)।

### करणी जी के काबे

- इनके मंदिर के चूहे । यहाँ सफेद चूहे के दर्शन करण जी के दर्शन माने जाते हैं।
- राव जोधा के समय मेहरानगढ़ दुर्ग की नींव करणी माता ने रखी।
- करणी माता की गायों का ग्वाला-दशरथ मेघवाल
- राव कान्ह ने इनकी गायों पर हमला किया ।
- महाराजा गंगासिंह ने इस मन्दिर में चांदी के किवाड़ भेंट किया ।
- इनके बचपन का नाम रिद्धुबाई. था।
- मठ – देवी के मन्दिर को मठ कहते हैं ।
- अवतार - जगतमाता
- उपनाम – काबा वाली माता, चूहों की देवी ।
- करणी जी की इष्ट देवी 'तेमड़ाजी' हैं । करणी जी के मंदिर के पास तेमड़ाराय देवी का भी मंदिर हैं ।करणी देवी का एकरूप 'सफेदचील' भी है ।
- 'नेहड़ी' नामक दर्शनीय स्थल है जो करणी माता के मंदिर से कुछ दूर स्थित है ।
- करणी जी के मठ के पुजारी चारण जाति के होते हैं।

- करणी जी के आशीर्वाद एवं कृपा से ही राठौड़ शासक 'रावबीका' नेबी का ने रमें राठौड़ वंश की स्थापना की थी । चौत्र एवं आश्विन माहकी नवरात्रि में मेला भरता हैं ।

## जीण माता -

- चौहान वंश की आराध्य देवी । ये धंधराय की पुत्री एवं हर्ष की बहन थी। मंदिर में इनकी अष्टभुजी प्रतिमा है। मंदिर का निर्माण रैवासा (सीकर) में पृथ्वीराज चौहान प्रथम के समय राजा हट्टड़ द्वारा।
- जीणमाता की अष्टभुजा प्रतिमा एक बार में ढ़ाई. प्याला मदिरा पान करती हैं ।इसे प्रतिदिन ढाई. प्याला शराब पिलाई. जाती है ।
- जीणमाता का मेला प्रतिवर्ष चौत्र और आश्विन माह के नवरात्रों में लगता है।
- जीणमाता तांत्रिक शक्तिपीठ हैं ।इसकी अष्टभुजी प्रतिमा के सामने घी एवं तेल की दो अखण्ड ज्योति सदैव प्रज्वलित रहतीहैं ।
- जीणमाता का गीत राजस्थानी लोक साहित्य में सबसे लम्बा हैं ।यह गीत कनफटे जोगियों द्वारा डमरू एवं सारंगी वाद्य की संगत में गाया जाता है।
- जीणमाता का अन्य नाम भ्रामरी देवी है ।

## कैला देवी -

- करौली के यदुवंश (यादववंश) की कुल देवी । इनकी आराधना में लागुरिया गीत गाये जाते हैं ।
- मंदिर :- त्रिकूटपर्वतकीघाटी (करौली) में। यहाँ नवरात्रा में विशाल लक्खी मेला भरता है।
- कैलादेवी का लक्खी मेला प्रतिवर्ष चौत्र मास की शुक्ला अष्टमी को भरता हैं ।कैलादेवी मंदिर के सामने बोहरा की छतरी है ।

## शिला देवी -

- जयपुर के कछवाहा वंश की आराध्यदेवी / कुलदेवी । इनका मंदिर आमेर दुर्ग में है ।



FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

## अन्नपूर्णा -

- शिलामाता की यह मूर्तिपाल शैली में काले संगमरमर में निर्मित हैं ।महाराजा मानसिंह पं. बंगाल के राजा के द्वार से सन् 1604 में मूर्ति लाए थे।
- इस देवी को नरबलि दी जाती थी तथा यहाँ भक्तों की मांग के अनुसार मन्दिर का चरणामृत दिया जाता हैं ।मान्यता है कि इस देवी की जहाँ पूजा होती है उसे कोईनहीं जीत सका।

## जमुवायमाता-

- ढूँढाड़ के कछवाहा राजवंश की कुलदेवी । इनका मंदिर जमुवारामगढ़, जयपुर में है। दुलहराय द्वारा मंदिर का निर्माण करवाया गया।

## आई.जी माता -

- सिरवी जाति के क्षत्रियों की कुलदेवी । इनका मंदिर बिलाड़ा (जोधपुर ) में है। मंदिर 'दरगाह' व थान 'बड़ेर' कहा जाता है। ये रामदेवजी की शिष्या थी। इन्हें मानी देवी (नवदुर्गा) का अवतार माना जाता हैं।
- इनके मन्दिर में मूर्ति नहीं होती तथा एक दीपक की लौ से के सरटपकती रहतीहैं ।इनके मन्दिर का पूजारी दीवान कहलाताहैं ।

## राणी सती -

- वास्तविक नाम 'नारायणी'। 'दादीजी' के नाम सेलोक प्रिय। झुंझुनूँ में राणी सती के मंदिर में हरवंर्श भाद्रपद अमावस्या को मेला भरता है ।
- इनके पति का नाम – तन धनदास

## नोट-

- इन्होंने हिसार में मुस्लिम सैनिकों को मारकर अपने पति की मृत्यु का बदला लिया और स्वयं सती हो गयी कुलदेवी ।

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- अग्रवाल समाज की कुलदेवी।
- राज्य सरकार ने 1988 में इस मेले पर प्रतिबंध लगा दिया क्योंकि 1987 में देवराला (सीकर) में "रूपकंवर" नामक राजपूत महिला सती हो गयी थी।

**आवड़ माता -**

- जैसलमेर के भाटी राजवंश की कुलदेवी । इनका मंदिर तेमड़ी पर्वत (जैसलमेर) पर है।

जैसलमेर के तेमड़ी पर्वत पर एक.......................................

**नोट** – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान _वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

**संपर्क करें –9694804063, 8233195718, 8504091672,9887809083**

**प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम -**

| EXAM (परीक्षा) | DATE | हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न |
|---|---|---|
| | | |



FREE SAMPLE

# अध्याय – 6

# मेले एवं त्यौहार

**हिन्दू कैलेंडर के अनुसार देशी महीने**

1. **चैत्र** –मार्च-अप्रेल
2. **वैशाख** –अप्रेल -मई.
3. **ज्येष्ठ** –मई.-जून
4. **आषाढ़** –जून-जुलाई.
5. **श्रावण**-जुलाई.- अगस्त
6. **भाद्रपद**-अगस्त -सितम्बर
7. **अश्विन**-सितम्बर- अक्टूबर
8. **कार्तिक** – अक्टूबर –नवम्बर
9. **मार्गशीर्ष** –नवम्बर – दिसम्बर
10. **पौष** –दिसम्बर- जनवरी
11. **माघ** –जनवरी-फरवरी
12. **फाल्गुन** –फरवरी –मार्च

**हिंदुओं के प्रमुख त्यौहार**

**धुलंडी** - यह होली के दूसरे दिन चैत्र कृष्ण प्रतिपदा(एकम) को मनाई. जाती है।होलिका दहन बुराई. पर अच्छाई. की जीत को दर्शाता है। वहीं दूसरी दिन को**धुलेंडी**या धूलिवंदन भी कहा जाता है। इस दिन लोग एक दुसरे पर रंग, गुलाल और अबीर आदि फेंकते है और ढोल बजा कर होली के गीत गाते है साथ ही घर-घर जाकर अपने दोस्तों और परिवारों आदि को भी रंग लगाया जाता है।

**गणगौर** - यह राजस्थान के सबसे खास त्योहारों में से एक है और राजस्थानियों के लिए यह त्यौहार एक विशेष महत्व रखता है। इस त्यौहार में सुहागन स्त्रियाँ शिव-पार्वती

की पूजा करती है। गणगौर के इस त्यौहार के दौरान युवा लड़कियां अपने सर्वश्रेष्ठ संगठनों में खुद को सजाती हैं और अपनी पसंद के जीवनसाथी के लिए देवी से आशीर्वाद मांगती हैं। दूसरी ओर विवाहित महिलाएं अपने पतियों के कल्याण के लिए प्रार्थना करती हैं। गणगौर त्यौहार में स्त्रियां अच्छे पति का वरदान पाने के लिए पूजा करती है। गणगौर का त्यौहार पार्वती के "गौने" का सूचक है। गणगौर का त्यौहार लगभग 18 दिन तक (चैत्र कृष्ण एकम से शुरू होकर चैत्र शुक्ल तृतीया) चलता है। इन दिनों सर्वाधिक घूमर नृत्य किया जाता है। जयपुर की गणगौर प्रसिद्ध है। धींगा गणगौर एवं बेंतमार मेला जोधपुर में लगता है। बिना ईसर की गणगौर जैसलमेर में पूजी जाती है। उदयपुर के महाराणा राजसिंह प्रथम ने अपनी छोटी महारानी को प्रसन्न करने के लिए रीति के विरुद्ध जबरदस्ती वैशाख कृष्ण तृतीया को गणगौर मनाने का प्रचलन प्रारंभ किया था जिससे इसका नाम धींगा गणगौर प्रसिद्ध हुआ। राजस्थान में नाथद्वारा क्षेत्र में चेत्र शुक्ल पंचमी को गुलाबी गणगोर मनाई. जाती है ।

***शीतला अष्टमी*** - यह त्यौहार चैत्र कृष्ण अष्टमी को मनाया जाता है।शीतलाअष्टमी हिन्दुओं का महत्वपूर्ण त्यौहार है।इस दिन शीतला माता को ठंडा भोग चढ़ाया जाता है एवं शीतला माता की पूजा की जाती हैऔर व्रत भी रखा जाता है।समस्त भोजन सप्तमी की संध्या को बनाकर रखा जाता है।इस दिन बासी खाना खाया जाता है जिस से इसे 'बासिड़ा' कहा जाता है ।बच्चो के चेचक निकलने पर शीतला माता की पूजा की जाता हैं। इसलिए शीतला माता को बच्चों की सरंक्षिका भी कहा जाता है।शीतलामाता का मंदिर चाकसू-जयपुर में हैं ।शीतला माता का वाहन गधा है माता के पुजारी कुमार जाती के लोग होते है

***घुड़ला का त्यौहार*** – यह त्यौहारजोधपुर , बाड़मेर, जैसलमेर आदि जिलों मेंचैत्र शुक्ल अष्टमी से शुरू होकर चैत्र शुक्ल तृतीया तक चलता है।

***घुड़ला त्यौहार का आरम्भ –*** *कोसाणा गांव में लगभग 200 कुंवारी कन्याएँ गणगौर पर्व की पूजा कर रही थी | घुडला खान मुसलमान सरदार अपनी फ़ौज के साथ निकल रहा था, उसने सभी बच्चियों का अपहरण कर लिया, इसकी सूचना गाँव के कुछ घुड़सवारों ने जोधपुर  के राव सातल सिंह राठौड़ जी को दी। राजपुतो की तलवारों ने भागती मुग़ल सेना का पीछा कर ख़ात्मा कर दिया । राव सातल सिंह जी ने तलवार के भरपुर वार से एक ही झटके में दुष्ट घुडला खान का सिर धड़ से अलग कर दिया। राव सातल सिंह ने सभी बच्चियों को मुक्त करवाकर उनके सतीत्व की रक्षा की। गांव वालों ने उस दुष्ट घुडला खान का कटा हुआ सिर बच्चियों को सोंप दिया|बच्चियो ने घुडला खान के सिर को घड़े पर रख कर उस घड़े मे जितने घाव घुडला खान के शरीर पर हुये, उतने छेद किये और फिर पुरे गाँव मे घुमाया एवं हर घर मे रोशनी की गयी| तभी से घुडला त्यौहार मनाया जाता हैं |*

***नववर्ष*** *- यह चैत्र शुक्ल एकम को मनाया जाता है। इस दिन हिन्दुओं का नया वर्ष शुरू होता है।हिंदी पंचांग में इस तिथि का बहुत अधिक महत्व है|*

***वसन्तीय नवरात्र*** *- यह नवरात्र चैत्र शुक्ल एकम से नवमी तक चलते है। इसमें इन नौ दिनों में माँ दुर्गा की पूजा की जाती है।*

***अरुंधति व्रत*** *- यह व्रत चैत्र शुक्ल एकम से शुरू होता है और चैत्र शुक्ल तृतीया तक चलता है।*

***अशोकाष्टमी*** *- यह चैत्र शुक्ल अष्टमी को मनाया जाता है। इस दिन अशोक वृक्ष की पूजा की जाती है।*

***रामनवमी*** *- यह त्यौहार अंतिम नवरात्र (चैत्र शुक्ल नवमी) के दिन भगवान श्री राम के जन्म दिन पर मनाया जाता है। इस दिन रामायण का पाठ किया जाता है। व्यापारी*

लोग इस दिन अपने बही खाते बदलते हैं। श्रद्धालुगण सरयू नदी में स्नान करके पुण्य लाभ कमाते हैं।

***आखा तीज/अक्षय तृतीया*** - यह वैशाख शुक्ल तृतीया को मनाया जाता है। यह एक अबूझ सावा है। इस दिन राजस्थान में सर्वाधिक बाल विवाह होते हैं। इस दिन किसान लोग अपने हल एवं सात अन्ना की पूजा करते है और शीघ्र वर्षा होने की कामना करते हैं। इसी दिन सतयुग एवं त्रेतायुग का आरम्भ माना जाता है।

***वट सावित्री व्रत (बड़मावस)*** - यह ज्येष्ठ अमावस्या को मनाया जाता है। इस दिन स्त्रियां व्रत रखकर बड़ या बरगद की पूजा कर अपने पुत्र एवं पति की आरोग्यता के लिए प्रार्थना करती हैं।

***निर्जला एकादशी***- यह ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी को मनाया जाता है।निर्जला एकादशी सभी 24 एकादशियों में सबसे पवित्र ..............................

***नोट*** – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक ***सैंपल मात्र*** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको ***"राजस्थान वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक"*** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये ***हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें*** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी ***"राजस्थान _वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक"*** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

***संपर्क करें- 9694804063, 8504091672, 8233195718,9887809083***

# अध्याय – 10

# सामाजिक रीत रिवाज एवं प्रथाएँ

## सोलह संस्कार

1. गर्भाधान
2. पुंसवन
3. सीमन्तोन्नयन
4. जातकर्म
5. नामकरण
6. निष्क्रमण
7. अन्नप्राशन
8. चूडाक्रम या जडूला
9. कर्णवेध
10. विद्यारम्भ
11. उपनयन
12. वेदारम्भ
13. केशान्त या गोदान
14. समावर्तन या दीक्षान्त
15. विवाह
16. अंत्येष्टि

हमारे यहां जीवन के हर मोड पर किसी न किसी रीति रिवाज का निर्वहन किया जाता है। इनमें से कुछ प्रमुख संस्कार , रिवाज इस प्रकार है।

**1. गर्भाधान**

जब किसी महिला द्वारा बार, गर्भाधारण किया जाता है, तब महिलाओं द्वारा मांगलिक गीत गाये जाते है।

**2. आठवाँ पूजन**

गर्भाधारण के आठवे महीने में आठवाँ  पूजन किया जाता है देवताओं से मन्नत मांगी जाती है। कि जच्चा बच्चा स्वस्थ व सुरक्षित रहें। इस अवसर पर गर्भाधारण करने वाली महिला के पीहर वाले विशेष रूप से उपस्थित रहते हैं।

**3. जन्म घूंटी पिलाना**

बच्चे के पैदा होने पर परिवार की किसी वृद्ध महिला द्वारा बच्चे को जन्म घंटी पिलाई. जाती है।

**4. कांसी की थाली बजाना**

बच्चा पैदा होते ही परम्परानुसार कांसी की थाली डंडे से बनाई. जाती है।

**5. कुआँ पूजन (जलवायु पूजन)**

बच्चे के जन्म के कुछ दिन बाद जच्चा को लेकर देवी देवताओं के गीत गाते हुए पनघट या कुएं पर पहुंचा जाता है। जहाँ  कुएं की पूजा की जाती है। इसे जलवा पूजन भी कहा जाता है।

**6. नामकरण संस्कार**

व्यक्ति के कुल सोलह संस्कार होते है, उनमें नामकरण भी एक है बच्चा पैदा होने पर ज्योतिषी से बच्चे का नामकरण करवाया जाता है। यह संसकरण प्रायः जन्म के ग्यारहवें दिन किया जाता है। पण्डित द्वारा जन्म घड़ी एवं नक्षत्रों के हिसाब से राशि का निर्धारण करते हुए नामकरण किया जाता है। कुल बारह राशियां होती है और प्रत्येक राशि में नौं नौं अक्षर होते है। इन अक्षरों में से ही किसी एक शुभ अक्षर से आरम्भ होने वाला नाम रख लिया जाता है।

**7. आख्या**

बच्चे के जन्म के आठवे दिन बहिन बेटियों को बुलाया जाता है आख्या की रस्म बहिन बेटियों द्वारा पूरी की जाती है। पूजन होता है, नवजात शिशु को साथिया भेंट किया जाता है स्वास्तिक एवं मांगलिक चिन्ह है। जो शुभ होकर विजय का प्रतीक है।

**8. मुण्डन संस्कार**

जब बच्चा साल भर में अधिक बड़ा  हो जाता है तब किसी शुभ दिन बच्चे के सिर के बाल उतारते हुये मुण्डन किया जाता है। सामान्यतः यह मुण्डन किसी तीर्थस्थल, देवस्थान, देवी देवताओं के मंदिर में सम्पन्न होता है।

**9. सगाई.**

लडका या लडकी के परिजन किसी चारण, भाट या पुरोहित को मध्यस्थ बनाकर सगाई. की बात करने भेजते हे जब दूसरा पक्ष सगाई. के प्रस्ताव को स्वीकर कर लेता है तो इसे लडका रोकना कहते है। इसे दस्तूत..............................

**नोट** – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **“राजस्थान वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक”** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **“राजस्थान _वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक”** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे,   धन्यवाद /

**संपर्क करें –9694804063, 9887809083, 8233195718,8504091672**



INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO FREE SAMPLE

# •राजस्थान की प्रमुख प्रथाएं

○ **सती प्रथा** - पति की मृत्यु पर पत्नी का उसकी चिता के साथ जलकर मौत का वरण करना ही 'सती प्रथा' कहलाता हैं। इस प्रथा को सहगमन/सहमरणा/अणवारोहण के नाम से भी जाना जाता हैं।

राज्य में सर्वप्रथम सती होने का प्रमाण वि.सं. 861 ई.के घटियाला शिलालेख (जोधपुर) से मिलते है, जबकि राज्य में सती प्रथा की अंतिम घटना दिवराला गांव (सीकर) को मानी जाती हैं। यह घटना 1987 ई.0 की हैं। इस घटना के बाद राजस्थान सरकार ने सती निवारण अधिनियम पारित किया।

- आजादी से पहले राज्य में सर्वप्रथम सती प्रथा पर बूंदी रियासत ने रोक लगाई थी।
- राजा राममोहनराय के प्रयासों से लॉर्ड विलियम बैंटिक ने सन् 1829 में सती प्रथा को रोकने के लिए सरकारी आदेश जारी किया था। इस आदेश के बाद अलवर रियासत ने सर्वप्रथम सती प्रथा पर रोक लगाई थी। भारत के शासक मुहम्मद तुगलक व अकबर ने भी सती प्रथा पर रोक लगाने के प्रयास किए थे।

राज्य में सबसे प्रसिद्ध सती प्रथा की घटना 1652 ई.में हुई। इसमें झुंझुनू के तन धन दास की पत्नी नारायणी देवी सती हुईथी। नारायणी देवी को रानी सती या सती दादी के नाम से भी जाना जात हैं। इस परिवार की कुल 13 महिलाएं सती हुई थी।

○ **अनुमरण प्रथा** - पति के शव के साथ सती न होकर उसके किसी चिन्ह (वस्तु) के साथ सती होना ही 'अनुमरण' कहलाता हैं। ऐसी 'सती' को महासती कहते हैं। मारवाड़ के राजा राव मालदेव की पत्नी उमादे जो कि जैसलमेर के राजा लूणकरण की पुत्री थी। यह उमादे भी मालदेव की पत्नी के साथ सती हुई थी।

○ **अणख प्रथा** - सती होने वाली महिला अपने परिवार के सदस्यों को कुछ उपदेश दिया करती थी, जिसे ही अणख प्रथा कहा जाता था।

- **जौहर प्रथा** - युद्ध में जीत की आशा ना देखकर राजपूत महिलाएं अपने स्त्रीत्व की रक्षा हेतु अग्नि या जल में कूदकर अपनी जान दे देती थी, इसे ही जौहर प्रथा कहते हैं।

- **केसरिया प्रथा** - राजपूत योद्धे के सरिया वस्त्र पहनकर युद्ध करते हुए, वीरगति को प्राप्त हो जाते थे, इसे ही केसरिया करना कहते हैं।

- **साका** - यदि जौहर और केसरिया किसी युद्ध के समय दोनों होते हैं, तो इसे साका कहते हैं।
- **अर्द्धसाका** - यदि किसी युद्ध में केसरिया तो हुआ, लेकिन 'जौहर' नहीं हुआ तो इसे 'अर्द्धसाका' कहते हैं।
- **डावरिया प्रथा** - राजाओं की लड़की के शादी में उनके साथ दहेज के रूप में अन्य कुंवारी कन्याएं दी जाती थी, जिसे 'डावरिया' कहा जाता था।
- **नाता प्रथा** - पुनर्विवाह को ही नाता प्रथा कहते हैं।
- **कोथला** - बेटी के पिता लड़कों वालों को बुलाकर कुछ उपहार देता हैं, इसे ही कोथला कहा जाता हैं।
- **समठुणी** - विवाह के उपरांत लड़की के पिता द्वारा बारातियों को विदाई. के समय कुछ भेंट प्रदान की जाती हैं। इसे ही समठुणी कहते हैं।

**त्यागप्रथा** - राजकुमारियों के विवाह के अवसर पर राजा या महाराजाओं द्वारा चारण साहित्यकारों को दिया जाने वाला उपहार। इसे ही 'पोलपात बारहठ' कहा जाता हैं। इस पर सर्वप्रथम 1841 ई.में जोधपुर.....................

**नोट** – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान**

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

***वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक"*** *के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये* ***हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें*** *, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी* ***"राजस्थान _वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक"*** *की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /*

***संपर्क करें –9694804063, 8504091672,9887809083, 8233195718***

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

# राजस्थान का इतिहास

## अध्याय – 2

## राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएं

अब हम राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएं पढ़ते हैं।

### 1. कालीबंगा की सभ्यता -

**इस सभ्यता की खोज : -**

इस सभ्यता की सबसे पहले जानकारी देने वाले एक पुरातत्ववेत्ता एवं भाषा शास्त्री लुईसपीतेंसीतोरी थे। इन्होंने इस सभ्यता के बारे में सबसे पहले परिचय दिया लेकिन इस सभ्यता की तरफ किसी का पूर्णरूप सेध्या न नहीं था इसलिए इसकी खोजन हीं हो पाई। इस सभ्यता के खोजकर्ता अमलानंद घोष हैं। उन्होनें 1952 में सबसे पहले इस सभ्यता की खोज की थी।

इनके बाद में इस सभ्यता की खोज दो अन्य व्यक्तियों के द्वारा भी की गई थी जो 1961 से 1969 तक चली थी।

1.बृजवासीलाल

2.बीके (बालकृष्ण) थापर इन्हीं दोनों ने इस सभ्यता की विस्तृत रूप से खोज की थी

**लुईस पी तैंसीतोरी के बारे में -**

ये इटली के पुदीने कस्बे के निवासी थे इनका जन्म सन् 1887 में हुआ । और यह 1900 ईस्वी में भारत आए । यह बीकानेर राज्य में सबसे पहले आए । उस समय के तत्कालीन राजा महाराजागंगा सिंह जीने इन्हें अपने राज्य का सभी प्रकार का चारण साहित्य लिखने की जिम्मेदारी दी । बीकानेर संग्रहालय भी इन्होंने ही बनवाया है । ये एक भाषा शास्त्री एवं पुरातत्ववेत्ता थे उन्होनें राजस्थानी भाषा के दो प्रकार बताएँ थे।

1. पूर्वी राजस्थानी 2. पश्चिमी राजस्थानी

इस सभ्यता का कालक्रम कार्बन डेटिंग पद्धति के अनुसार 2350 ईसा पूर्व से 1750 ईसा पूर्व माना जाता है।

कालीबंगा शब्द "सिंधी भाषा" का एक शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है - "काले रंग की चूड़ियां"। इस स्थल से काले रंग की चूड़ियों की बहुत सारी ढेर प्राप्त हुए इसलिए इस सभ्यता को कालीबंगा सभ्यता नाम दिया गया।

कालीबंगा की सभ्यता है भारत की ऐसी पहली सभ्यता स्थल है जो स्वतंत्रता के बाद खोजी गई थी। यह एक कांस्य युगीन सभ्यता है।

हनुमानगढ़ जिलें से इस सभ्यता से संबंधित जो भी वस्तुएं प्राप्त हुई हैं उनको सुरक्षित रखने के लिए राजस्थान सरकार के द्वारा 1985 - 86 में कालीबंगा संग्रहालय की स्थापना की गई थी । यह संग्रहालय हनुमानगढ़ जिलें में स्थित है।

**<u>यह सभ्यता की विशेषताएं -</u>**

इस सभ्यता की सड़कें एक दूसरे को समकोण पर काटती थीं इसलिए यहां पर मकान बनाने की पद्धति को "ऑक्सफोर्ड पद्धति" कहते हैं। इसी पद्धति को जाल पद्धति, ग्रीक, चेम्सफोर्ड पद्धति के नाम से भी जानते हैं।

मकान कच्ची एवं पक्की ईंट के बने हुए थे, आरम्भ यह कच्ची ईंटे थीं इसलिए इस सभ्यता को दीन हीन सभ्यता भी कहते हैं इन ईंटों का आकार 30 x 15 x 7.5 है।

इन मकानों की खिड़की एवं दरवाजे पीछे की ओर होते थे

यहां पर जो नालियां बनी हुई थी वह लकड़ी (काष्ठ) की बनी होती थी। आगे चलकर इन्हीं नालियों का निर्माण पक्की ईटों से होता था (विश्व में एकमात्र ऐसा स्थान जहां लकड़ियों की बनी नालियां मिली है वह कालीबंगा स्थल है)

विश्व की प्राचीनतम जुते हुए खेत के प्रमाण इसी सभ्यता से मिलते हैं।

यहां पर मिले हुए मकानों के अंदर की दीवारों में दरारें मिलती हैं इसलिए माना जाता है कि विश्व में प्राचीनतम भूकंप के प्रमाण यहीं से प्राप्त होते हैं।



FREE SAMPLE

यहां के लोग एक साथ में दो फसलें करते थे अर्थात् फसलों के होने के प्रमाण भी यहीं से मिलते हैं जों और गेहूं।

यहां पर उत्खनन के दौरान यज्ञकुंड / अग्नि वेदिकाएं प्राप्त हुए हैं यहां के लोग बलिप्रथा में भी विश्वास रखते थे।

इस सभ्यता का पालतू जानवर कुत्ता था । यह सभ्यता के लोग ऊंट से भी परिचित थे । इसके अलावा गाय, भैंस, बकरी, घोड़ा से भी परिचित थे।

विश्व में प्राचीनतम नगर के प्रमाण यहीं पर मिले हैं, इसलिए इसे नगरीय सभ्यता भी कहते हैं यहां पर मूर्तिपूजा, देवी / देवता के पूजन, चित्रांकन या मूर्ति का कोई प्रमाण नहीं मिला है।

यहां पर समाधि प्रथा का प्रचलन था। यह समाधि तीन प्रकार की मिलती है अर्थात् तीन प्रकार से मृतक का अंतिम संस्कार किया जाता था

- अंडाकार गड्डे खोद कर व्यक्ति को दफनाना । इस गड्डे में व्यक्ति का सिर उत्तर की ओर पैर दक्षिण की ओर होते थे
- अंडाकार गड्डे खोदकर व्यक्ति को तोड़मरोड़ कर इकट्ठा करके दफनाना
- एक खड्डा खोदकर व्यक्ति के साथ आभूषण को दफनाना ।

स्वास्तिक चिन्ह का प्रमाण इसी कालीबंगा सभ्यता से प्राप्त होता है इस स्वास्ति क चिन्ह का प्रयोग यहां के लोग वास्तुदोष को दूर करने के लिए किया करते थे ।

कालीबंगा की सभ्यता और मेसोपोटामिया की सभ्यता की समानता के प्रमाण बेलनाकार बर्तन मिलते हैं।

यहां पर एक कपाल मिलता है जिसमें छः प्रकार के छेद थे। जिससे अनुमान लगाया जाता है कि यहां के लोग शल्य चिकित्सा से परिचित थे अर्थात् शल्य चिकित्सा के प्राचीनतम प्रमाण इसी सभ्यता से मिलते हैं।

यहां पर एक सिक्का प्राप्त होता है जिस के एक और स्त्री का चित्र है तथा दूसरी ओर चीता का चित्र बना हुआ है अर्थात् अनुमान......................................

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO FREE SAMPLE

**नोट** – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान _वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

**संपर्क करें –9694804063, 8233195718, 8504091672,9887809083**

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

# अध्याय-5

# मारवाड़ का इतिहास

## राठौड़ वंश

राजस्थान के उत्तरी पश्चिम भाग में जिस राजपूत वंश का शासन हुआ उसे राठौड़ वंश कहा गया है। उसे मारवाड़ के नाम से जाना जाता है। मारवाड़ में पहले गुर्जर प्रतिहार वंश का राजा था। प्रतिहार यहाँ से कन्नौज (उत्तरप्रदेश) चले गये। फिर राठौड़ वंश कि स्थापना इस भाग में हुई तथा मारवाड़ कि संकटकालीन राजधानी 'शिवाना दुर्ग' को कहा जाता था।

| शाखा | स्थापना | संस्थापक |
|---|---|---|
| 1. मारवाड़ (जोधपुर ) | 1240 ई. | राव सीहा |
| 2. बीकानेर | 1465 ई. | राव बीका |
| 3- किशनगढ़ | 1609 ई.- | किशनसिंह |

हम इस अध्याय में मारवाड़ के राठौड़ वंश का विस्तृत अध्ययन करेंगे।

## उत्पत्ति

राठौड़ शब्द की व्युत्पत्ति राष्ट्रकूट शब्द से मानी जाती है।

पृथ्वीराजरासो, नैणसी, दयालदास और कर्नल टॉड राठौड़ों को कन्नौज के जयचन्द गहड़वाल का वंशज मानते हैं।

राठौड़ वंश महाकाव्य में राठौड़ों की उत्पत्ति शिव के शीश पर स्थित चन्द्रमा से बताई है।

डॉ. हार्नली ने सर्वप्रथम राठौड़ों को गहड़वालों से भिन्न माना है। इस मत का समर्थन डा. ओझा ने किया हैं।

डा. ओझा ने मारवाड़ के राठौड़ों को बदायूँ के राठौड़ों का वंशज माना हैं।



INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

## मारवाड़ (जोधपुर ) के राठौड़ संस्थापक – राव सीहा (1240 – 1273)

मारवाड़ के राठौड़ वंश के संस्थापक, तथा मारवाड़ के राठौड़ों का संस्थापक या आदि पुरुष भी कहा जाता है ।

राव सीहां कुंवर 'सेतराम' का पुत्र था उसकी रानी सोलंकी वंश की 'पार्वति थी ।

13 वीं शताब्दी में जब तुर्कों ने कन्नौज को आक्रमण कर बरबाद कर दिया तो राव सीहा मारवाड़ चला आया ।

राव सीहा ने सर्वप्रथम पाली ( वर्तमान ) के निकट अपना साम्राज्य स्थापित किया ऐसा कहते है कि उन्होनें पाली के पालीवाल ब्राह्मणों को मेर व मीणाओं के अत्याचार से मुक्ति दिलाई उनकी रक्षा की तथा उसके पश्चात् उनके आग्रह पर वहीं आकर बस गया ।

पाली के समीप बीठू गाँव के देवल के लेख से सीहा की मृत्यु की तिथि 1273 ई. निश्चित होती है ।इस लेख के अनुसार सीहा सेतकुँवर का पुत्र था । उसकी पत्नी पार्वती ने उसकी मृत्यु पर इस देवल का निर्माण करवाया था ।इस लेख के अनुसार सीहा की मृत्यु बीठू गांव ( पाली ) में मुसलमानों से गायों कि रक्षा करते हुए युद्व के दौरान हुई थी । इस लेख पर अश्वारोही सीहा को शत्रु पर भाला मारते हुए दिखाया गया है । इस लेख से प्रमाणित होता है कि इस समय राठौड़ों का राज्य विस्तार पाली के आस - पास ही सीमित था ।

राव सीहा के पश्चात् उनका पुत्र आस्थान गद्दी पर बैठा ।

## आस्थान ( 1273 – 1291)

सीहा के बाद आस्थान राठोड़ों का शासक बना। उसने गूँदोज को केन्द्र बनाया । 1291 ई. में सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय पाली की रक्षा करते हुए आस्थान वीरगति को प्राप्त हुआ

आस्थान के पुत्र धूहड़ ने राठौड़ों की कुलदेवी चक्रेश्वरी की मूर्ति कर्नाटक से लाकर नगाणा गांव ( बाड़मेर ) मे स्थापित कराई ।

राठौड़ राजवंश की कुलदेवी चक्रेश्वरी, राठेश्वरी, नागणेची या नागणेचिया के नाम से प्र सिद्ध है ।

इनके छोटे भाई का नाम धांधल था। ये लोकदेवता पाबू जी के पिता थे ।

## राव चूड़ा (1383 – 1423)

राव चूडा विरमदेव का पुत्र था ।

राव चूड़ा राठौड़ों का प्रथम महत्वपूर्ण शासक माना जाता हैं । अपने पिता की मृत्यु के समय चूड़ा छः वर्ष का था । इसलिए उसकी माता ने उसे चाचा मल्लिनाथ के पास भेज दिया। मल्लिनाथ ने चूड़ा को सालोड़ी गाँव जागीर में दिया था ।

उसने इन्दा शाखा के राजा की पुत्री किशोर कुंवरी ( मण्डोर जोधपुर ) से विवाह किया तथा दहेज में उसे मण्डौर दुर्ग मिला ।

चूड़ा ने इन्दा परिहारों के साथ मिलकर मण्डौर को मालवा के सूबेदार से छीन लिया तथा मण्डौर को अपनी राजधानी बनाया।

इस प्रकार इन्दा परिहारों को अपना सहयोगी बनाकर राव चूड़ा ने मारवाड़ में सामन्त प्रथा की स्थापना की।

उसने जलाल खां खोखर को पराजित कर नागौर पर अधिकार कर लिया था ।

परन्तु जैसलमेर के भाटियों और जांगलप्रदेश के सांखलाओं के नागौर पर आक्रमण के समय 1423 ई. में चूड़ा मारा गया ।

राव चूड़ा ने नागौर के पास चूण्डासर कस्बा बसाया ।

उसकी रानी चाँद कँवर ने जोधपुर की चाँदबावड़ी का निर्माण करवाया था ।

## रावल मल्लिनाथ

राजस्थान के प्रसिद लोकदेवता इन्होंने अपनी राजधानी 'मेवानगर' (नाकोड़ा) बनायी ।

मल्लीनाथ के नाम पर ही मारवाड़ क्षेत्र को मालाणी कहते हैं ।

भाई 'वीरम' (मल्लीनाथ ने अपने बेटे जगमाल को राजा न बनाकर वीरम को राजा बना दिया।



FREE SAMPLE INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

## कान्हा (1423-1427)

चूड़ा ने अपनी मोहिलाणी रानी के प्रभाव में आकर उसके पुत्र कान्हा को अपना उत्तराधिकारी बनाया जबकि रणमल, चूड़ा का ज्येष्ठ पुत्र था।

रणमल मेवाड़ के राणा लाखा की शरण में चला गया तथा अपनी बहन हंसाबाई का विवाह लाखा से कर दिया। राणा ने उसे धणला गाँव जागीर में दिया।

1427 ई. में रणमल ने राणा मोकल की सहायता से मण्डौर पर अधिकार कर लिया। इस समय कान्हा का उत्तराधिकारी सत्ता मण्डौर का शासक था।

ऐसा कहा जाता है कि राव कान्हा कि मृत्यु 'करणी माता के हाथों हुई थी ।

## राव रणमल,-(1427-1438)

राव रणमल, राव चूडा का ज्येष्ठ पुत्र था जो उन्हें रानी चाँद कवर से हुआ था ।

परंतु जब उसे राजा नहीं बनाया गया तो वह नाराज होकर मेवाड़ के राणा लक्ष सिंह (लाखा)की शरण में चला गया ।

राणा लाखा ने रणमल को 'धणला' की जागीर प्रदान की ।

रणमल ने अपनी बहन हंसाबाई का विवाह राणा लाखा से कर दिया । परंतु उसने एक शर्त रखी जिसके अनुसार हंसाबाई का पुत्र ही मेवाड़ का शासक बने ।

रणमल ने अपने समय में मारवाड़ और मेवाड़ रियासतों पर मजबूत नियंत्रण बना रखा था।

रणमल ने अपने भाई तथा मारवाड़ के राजा 'कान्हा के साथ युद्ध किया तथा इस युद्ध में रणमल का साथ मेवाड़ के मोकल (भॉजा) ने दिया । इस युद्ध में कान्हा मारा गया ।

मेवाड़ी सरदारों ने 1438 ई. में उसकी प्रेयसी भारमली की सहायता से चित्तौड़ में रणमल की हत्या कर दी । ऐसा कहा जाता है कि उसे उसकी प्रेयसी भारमली ने शराब में विष दिया था । इस तरह रणमल का अंत हुआ ।

## राव जोधा (1438 - 1489)

1. राव 'रणमल' को रानी 'कोडमद' से जो पुत्र हुआ वहीं राव जोधा था ।



FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

2. पिता रणमल की हत्या के बाद जोधा ने चित्तौड़ से भागकर बीकानेर के समीप काहुनी गाँव में शरण ली ।

3. चूड़ा के नेतृत्व में मेवाड़ की सेना ने राठौड़ों की राजधानी मण्डौर पर अधिकार कर लिया। 15 वर्ष बाद राव जोधा मण्डौर पर पुनः अधिकार कर पाया ।

4. राव जोधा ने सन् 1453 में मण्डौर राज्य को अपने अधीन किया ।

5. राव जोधा ने 13 मई 1459 ई. में जौधपुर नगर बसाया /

6. राव जोधा ने 1459 ई. में चिड़ियाटुक पहाड़ी पर मेहरानगढ़ दुर्ग का निर्माण कराया /

7. दुर्ग के निर्माण के पश्चात् राव जोधा ने अपनी राजधानी मण्डौर से .......................

**नोट** – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान _वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

**संपर्क करें –9694804063, 8233195718, 8504091672,9887809083**

**प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम -**

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

| EXAM (परीक्षा) | DATE | हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न |
|---|---|---|
| RAS PRE. 2021 | 27 अक्तूबर | 74 (cut off- 64) |
| SSC GD 2021 | 16 नवम्बर | 68 (100 में से) |
| SSC GD 2021 | 30 नवम्बर | 66 (100 में से) |
| SSC GD 2021 | 01 दिसम्बर | 65 (100 में से) |
| SSC GD 2021 | 08 दिसम्बर | 67 (100 में से) |
| राजस्थान S.I. 2021 | 13 सितम्बर | 113 (200 में से) |
| राजस्थान S.I. 2021 | 14 सितम्बर | 119 (200 में से) |
| राजस्थान S.I. 2021 | 15 सितम्बर | 126 (200 में से) |
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 23 अक्तूबर (1st शिफ्ट) | 79 (150 में से) |
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट) | 103 (150 में से) |
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 24 अक्तूबर (1st शिफ्ट) | 95 (150 में से) |
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट) | 91 (150 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 27 दिसंबर (1st शिफ्ट) | 59 (100 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 27 दिसंबर (2nd शिफ्ट) | 61 (100 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 28 दिसंबर (1st शिफ्ट) | 56 (100 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 28 दिसंबर (2nd शिफ्ट) | 57 (100 में से) |

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

| | | |
|---|---|---|
| U.P. SI 2021 | 14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट | 91 (160 में से) |
| U.P. SI 2021 | 21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट) | 89 (160 में से) |

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें /

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

संपर्क करें –9694804063, 8233195718, 8504091672,9887809083

## • 'कच्छवाहा' वंश

कच्छवाहा' अपने आपको भगवान श्री राम के पुत्र कुश' की संतान मानते हैं।

संस्थापक दुलहराय (तेजकरण), मूलतः ग्वालियर निवासी था। 1137 ई. में उसने बड़गुजरों को हराकर नवीन ढूँढाड़ राज्य की स्थापना की।

दुलहराय के वंशज कोकिलदेव ने 1207 ई. में मीणाओं से आमेर जीतकर अपनी राजधानी बनाया, जो 1727 ई. तक कच्छवाहा वंश की राजधानी रहा।

इसी वंश के शेखा ने शेखावटी में अपना अलग राज्य बनाया।

### कछवाहा वंश के प्रमुख शासक

### पृथ्वीसिंह

यह आमेर का पहला शक्तिशाली शासक था। 1527 में खानवा के युद्ध में पृथ्वीराज राणा सांगा की तरफ से लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त होता है इस समय पृथ्वीराज की पत्नी बालाबाई अपने छोटे पुत्र पूरणमल का राज्याभिषेक करवाती है जिसके कारण पृथ्वीराज का बड़ा पुत्र भीमदेव नाराज हो जाता है।

भीमदेव 1533 में पूरणमल को परास्त करके स्वयं शासक बनता है, 1536 में भीमदेव की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र रतनसिंह शासक बनता है, रतन सिंह से उसका चाचा सांगा शत्रुता रखने लग जाता है, सांगा ने बीकानेर के राव जैतसी के साथ मिलकर रतन सिंह से उसका मोजमाबाद वाला क्षेत्र छीनकर सांगानेर बसाता है, सांगा की मृत्यु के पश्चात् उसका छोटा भाई भारमल रतनसिंह से शत्रुता रखने लग जाता है. भारमल ने रतन सिंह के छोटे भाई आसकरण को अपने पक्ष में मिलाते हुए आसकरण के माध्यम से रतन सिंह की हत्या करवा देता है और आसकरण को कुछ समय के लिए शासक बनाता है भारमल जून 1547 में आसकरण को हटाते हुए स्वयं शासक बन जाता है।

रानी बालाबाई ने गलता में कृष्णदास पयहारी संप्रदाय को संरक्षण दिया था।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO FREE SAMPLE

## भारमल (1547-1574 ई.)

भारमल (1547-1574 ई.) या बिहारीमल 1547 ई. में भारमल आमेर का शासक बना। भारमल प्रथम राजस्थानी शासक था, जिसने अकबर की अधीनता स्वीकार की व 1562 ई. में अपनी पुत्री हरखाबाई उर्फ मानमति या शाही बाई (मरियम उज्जमानी) का विवाह अकबर से किया।

मुगल बादशाह जहाँगीर हरखाबाई का ही पुत्र था।

## अकबर और राजस्थान यात्रा :

अकबर ने अपने जीवन में पहली बार यात्रा के लिए 1562 में राजस्थान आता है यही उसकी राजस्थान की पहली यात्रा थी इस यात्रा का उद्देश्य अजमेर स्थित ख्वाजा साहब की दरगाह में जियारत करना था।

इस यात्रा के दौरान आमेर का शासक भारमल सांभर के निकट अकबर से सामेला प्रक्रिया से मुलाकात करते हुए अकबर की अधीनता स्वीकार करता है, तथा अपनी पुत्री के विवाह का प्रस्ताव रखता है।

## जोधा अकबर विवाह:

अजमेर से लौटता हुआ अकबर 10 जनवरी 1562 को भारमल की पुत्री जोधाबाई / हरकाबाई के साथ विवाह करता है ।

जोधा अकबर विवाह पहला राजपूत मुगल विवाह सम्बन्ध था ।

भारमल पहला राजपूत था जिसने मुगलों की अधीनता स्वीकार की थी ।

अकबर ने भारमल को अमीर-उल-उमरा की उपाधि प्रदान की थी तथा उसके पुत्र भगवंतदास व पौत्र मानसिंह को अपनी दरबारी सेवा में नियुक्त किया ।

## भगवन्त दास (1574-1589 ई.)

भगवन्त दास या भगवान दास भारमल का पुत्र था।

उसने अपनी पुत्री मानबाई (मनभावनी) का विवाह शहजादे सलीम (जहाँगीर) से किया।



FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

मानबाई को सुल्तान निस्सा' की उपाधि प्राप्त थी। खुसरो इसी का पुत्र था।

1562 में जब भारमल (Raja Bharmal) अकबर की अधीनता स्वीकार करता है, तो अकबर भगवंतदास को अपनी दरबारी सेवा में नियुक्त करता है।

भगवानदास मुगलों के दरबार में नियुक्त होने वाला पहला राजपूत दरबारी था।

अकबर ने भगवंत दास को 1582 में लाहौर का सूबेदार नियुक्त किया था। इसी लाहौर सूबेदारी के तहत् 1589 में भगवंत दास ने अपनी पुत्री मानबाई का विवाह अकबर के पुत्र सलीम के साथ करवाया था।

मानबाई को मुगल दरबार में सुल्ताना मस्ताना' के नाम से जाना जाता था। खुसरो इसी का पुत्र था, जहाँ गीर के अत्यधिक शराबी होने के कारण मानबाई ने 1608 में आत्महत्या कर ली थी।

मानबाई का शाही मकबरा इलाहाबाद में स्थित है।

## मानसिंह (1589-1614 ई.)

मानसिंह भगवन्त दास का पुत्र था।

मानसिंह आमेर के कच्छवाहा शासकों में सर्वाधिक प्रतापी एवं महान् राजा था।

मानसिंह ने 52 वर्ष तक मुगलों की सेवा की ।

मानसिंह 1573 में अकबर के दूत के रूप में राणा प्रताप से मिला था ।

1576 ई. में हल्दीघाटी युद्ध में उसने शाही सेना का नेतृत्व किया था।

अकबर ने उसे फर्जन्द (पुत्र) एवं राजा की उपाधि प्रदान की।

वह अकबर के नवरत्नों में शामिल था।

मानसिंह ने बंगाल में अकबर नगर तथा बिहार में मानपुर नगर को बसाया ।

मानसिंह स्वयं कवि, विद्वान, साहित्य प्रेमी व विद्वानों का आश्रयदाता था।

शिलादेवी (आमेर), जगत शिरोमणी (आमेर) गोविन्द देवजी (वृंदावन) मंदिर उसी ने बनवाये थे।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

## बिहार सूबेदारी:-

अकबर मानसिंह को 1587 में बिहार का सूबेदार नियुक्त करता है। बिहार सूबेदारी के दौरान 1589 में भगवंतदास की मृत्यु होने पर मानसिंह का राज्याभिषेक होता है इस समय अकबर मानसिंह की मनसब 5000 निश्चित करता है। बिहार सूबेदारी के दौरान ही मानसिंह ने 1594 में उड़ीसा को जीतकर उसे मुगल भारत का अंग बनाया था।

## बंगाल सूबेदारी:-

1594 में मानसिंह बंगाल का सूबेदार नियुक्त होता है। बंगाल सूबेदारी के दौरान बीमार होने पर मानसिंह अजमेर आकर बंगाल पर नियंत्रण हेतु अपने पुत्र जगत सिंह को बंगाल भेजता है।

मानसिंह ने आमेर में जल आपूर्ति हेतु मानसागर झील का निर्माण करवाया था तथा आमेर के महलों व आमेर के मुकुट बिहारी मंदिर का निर्माण ..........................................

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

**नोट** – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान _वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

**संपर्क करें –9694804063, 8504091672,9887809083, 8233195718,**

# अध्याय - 6

# राजस्थान के अन्य वंश

परमार का शाब्दिक अर्थ शत्रु को मारने वाला होता है। प्रारम्भ में परमारों का शासन आबू के आस-पास के क्षेत्रों तक ही सीमित था। प्रतिहारों की शक्ति के ह्रास के उपरान्त परमारों की राजनीतिक शक्ति में वृद्धि हुई।

## राजस्थान के परमार वंश

**आबू के परमार** :- आबू के परमार वंश का संस्थापक 'धूमराज' था, लेकिन इनकी वंशावली उत्पलराज से प्रारम्भ होती है। पड़ौसी होने के कारण आबू के परमारों का गुजरात के शासकों से सतत् संघर्ष चलता रहा। गुजरात के शासक मूलराज सोलंकी से पराजित होने के कारण आबू के शासक धरणीवराह को राष्ट्रकूट धवल का शरणागत होना पड़ा। लेकिन कुछ समय बाद धरणीवराह ने आबू पर पुनः अधिकार कर लिया। उसके बाद महिपाल का 1002 ई. में आबू पर अधिकार प्रमाणित होता है। इस समय तक परमारों ने गुजरात के सोलंकियों की अधीनता स्वीकार कर ली। महिपाल के पुत्र धंधुक ने सोलंकियों की अधीनता से मुक्त होने का प्रयास किया। फलतः आबू पर सोलंकी शासक भीमदेव ने आक्रमण किया। धंधुक आबू छोड़कर धार के शासक भोज के पास चला गया। भीमदेव ने विमलशाह को आबू का प्रशासक नियुक्त किया। विमलशाह ने भीमदेव व धंधुक के मध्य पुनः मेल करवा दिया। उसने 1031 ई. में आबू में 'आदिनाथ' के भव्य मंदिर का भी निर्माण करवाया। धंधुक की विधवा पुत्री ने बसन्तगढ़ में सूर्यमंदिर का निर्माण करवाया व सरस्वती बावड़ी का जीर्णोद्धार करवाया।

**कृष्णदेव के शासनकाल** :- - कृष्णदेव के शासनकाल में 1060 ई. में परमारों और सोलंकियों के सम्बन्ध पुनः बिगड़ गए, लेकिन नाड़ौल के चौहान शासक बालाप्रसाद ने इनमें पुनः मित्रता करवाई। कृष्णदेव के पौत्र विक्रमदेव ने महामण्डलेश्वर की उपाधि धारण

की। विक्रमदेव का प्रपौत्र धारावर्ष (1163-1219 ई.) आबू के परमारों का शक्तिशाली शासक था। इसने मोहम्मद गौरी के विरुद्ध युद्ध में गुजरात की सेना का सेनापतित्व किया। वह गुजरात के चार सोलंकी शासकों कुमारपाल, अजयपाल, मूलराज व भीमदेव द्वितीय का समकालीन था। उसने सोलंकियों की अधीनता का जुआ उतार फेंका। उसने नाडौल के चौहानों से भी अच्छे सम्बन्ध रखे। अचलेश्वर के मन्दाकिनी कुण्ड पर बनी हुई धारावर्ष की मूर्ति और आर-पार छिद्रित तीन भैंसे उसके पराक्रम की कहानी कहते हैं। 'कीर्ति कौमूदी' नामक ग्रंथ का रचयिता सोमेश्वर धारावर्ष का कवि था। उसके पुत्र सोमसिंह के शासनकाल में तेजपाल ने आबू के देलवाड़ा गाँव में 'लूणवसही' नामक नेमिनाथ का मंदिर अपने पुत्र लूणवसही व पत्नी अनुपमादेवी के श्रेयार्थ बनवाया। इसके पश्चात् प्रतापसिंह और विक्रम सिंह आबू के शासक बने। 1311 ई. के लगभग नाडौल के चौहान शासक राव लूम्बा ने परमारों की राजधानी चन्द्रावती पर अधिकार कर लिया और वहाँ चौहान प्रभुत्व की स्थापना कर दी।

**मालवा के परमार** :- - मालवा के परमारों का मूल उत्पत्ति स्थान भी आबू था। इनकी राजधानी उज्जैन या धारानगरी रही, मगर राजस्थान के कई भू-भाग-कोटा राज्य का दक्षिणी भाग, झालावाड़, वागड़, प्रतापगढ़ का पूर्वी भाग आदि इनके अधिकार में थे। मालवा के परमारों का शक्तिशाली शासक मुंज हुआ, वाक्पतिराज, अमोघ-वर्ष उत्पलराज, पृथ्वीवल्लभ, श्रीवल्लभ आदि उसके विरुद थे। मेवाड़ के शासक शक्तिकुमार के शासनकाल में उसने आहड़ को नष्ट किया और चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया। उसने चालुक्य शासक तैलप द्वितीय को छः बार परास्त किया, मगर सातवीं बार उससे पराजित हुआ और मारा गया। राजा मुंज को 'कवि वृष' भी कहा जाता था। 'नवसहसांक चरित' का रचयिता पद्मगुप्त और अभिधानमाला' का रचयिता हलायुध उसके दरबार की शोभा बढ़ाते थे।

मुंज के बाद सिन्धुराज और भोज प्रसिद्ध परमार शासक हुए। भोज अपनी विजयों और विद्यानुराग के लिए प्रसिद्ध था। भोज ने सरस्वती कण्ठाभरण, राजमृगांक, विद्वज्जनमण्डल, समरांगण, शृंगार मंजरी कथा, कूर्मशतक आदि ग्रंथ लिखे। चित्तौड़ में उसने 'त्रिभुवन



FREE SAMPLE

नारायण' का प्रसिद्ध शिव मंदिर बनवाया, जो मोकल मंदिर के नाम से भी जाना जाता है, (1429 ई. में राणा मोकल द्वारा जीर्णोद्धार के कारण)। कुम्भलगढ़ प्रशस्ति के अनुसार नागदा में भोजसर का निर्माण भी परमार भोज द्वारा करवाया गया। उसने सरस्वती कण्ठाभरण नामक पाठशाला बनवाई। वल्लभ, मेरुतुंग, वररुचि, सुबन्धु, अमर, राजशेखर, माघ, धनपाल, मानतुंग आदि विद्वान उसके दरबार में थे।

भोज का उत्तराधिकारी जयसिंह भी एक योग्य शासक था। वागड़ का राजा मण्डलीक उसका सामन्त था। 1135 ई. के लगभग मालवा पर चालुक्य शासक सिद्धराज ने अधिकार कर लिया और परमारों की शक्ति ह्रासोन्मुख हो गई। तेरहवीं शताब्दी में अर्जुन वर्मा के समय मालवा पर पुनः परमारों का आधिपत्य स्थापित हुआ। मगर यह अल्पकालीन रहा। खिलजियों के आक्रमण ने मालवा के वैभव को नष्ट कर दिया और परमार भाग कर अजमेर चले गए।

**वागड़ के परमार** :- - वागड़ के परमार मालवा के परमार कृष्णराज के दूसरे पुत्र डम्बरसिंह के वंशज थे। इनके अधिकार में डूंगरपुर-बाँसवाड़ा का राज्य था, जिसे वागड़ कहते थे। अर्थूणा इनकी राजधानी थी। धनिक, कंकदेव, सत्यराज, चामुण्डराज, विजयराज आदि इस वंश के शासक हुए। चामुण्डराज ने 1079 ई. में अर्थूणा में मण्डलेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया। 1179 ई. में गुहिल शासक सामन्तसिंह ने परमारों से वागड़ छीन कर वहाँ गुहिल वंश का शासन स्थापित कर दिया। अर्थूणा के ध्वस्त खण्डहर आज भी परमार काल की कला और समृद्धि की कहानी बयां करते हैं।

**जाट वंश**

○ राजस्थान के पूर्वी भाग भरतपुर, धौलपुर पर जाट वंश का शासन था।

भरतपुर के जाटवंश के ....................

FREE SAMPLE

**नोट** – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान _वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

**संपर्क करें –9694804063, 9887809083 8233195718,8504091672,**

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

# अध्याय – 12

# राजस्थान का एकीकरण

- प्रिय दोस्तों, ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली ने घोषणा की थी कि 3 जून 1948 तक भारत की सत्ता भारतीयों को सौंप दी जाएगी ।
- इन्होंने नया गर्वनर जनरल लार्ड माउन्टबेटन को नियुक्त किया (भारत का अंतिम गवर्नर जनरल)
- 31 दिसम्बर 1945 को उदयपुर राज्य में पंडित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् के अधिवेशन में राजस्थान के एकीकरण का सुझाव दिया गया । राजाओं के वैमनस्य को देखते हुए यह लगने लगा था कि ये लोग स्वयं कोई निर्णय नहीं ले पायेंगे । इसलिए अनुभव किया जाने लगा कि अब केन्द्र सरकार को ही एकीकरण का प्रयास करना होगा ।
- अतः सरदार वल्लभ भाई. पटेल ने 16 दिसम्बर 1948 को यह घोषणा की कि राजस्थान की सभी छोटी-बड़ी रियासतों को मिलाकर एक संघ का निर्माण किया जाएगा ।
- केबिनेट मिशन के अनुसार ब्रिटिश सरकार ने 22 मई 1946 ई. को घोषणा की कि छोटी-छोटी रियासतों को आपस में मिलाकर बड़ी इकाईयां बना लेनी चाहिए या पड़ोस की बड़ी रियासतों या प्रांतों में मिल जाना चाहिए ।
- भारत स्वतंत्रता अधिनियम - 1947 की आठवीं धारा के अनुसार देशी रियासतों पर से ब्रिटिश प्रभुसत्ता का अंत हो गया ।
- स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में तीन श्रेणी के राज्य थे –

(1) ए श्रेणी - वे राज्य, जो पूर्व में प्रत्यक्ष ब्रिटिश नियंत्रण में थे जैसे बिहार, बम्बई., मद्रास आदि । इनके प्रमुख राज्यपाल (गवर्नर) कहलाते थे ।

(2) बी श्रेणी - वे राज्य, जो स्वतंत्रता के बाद छोटी-बड़ी रियासतों के एकीकरण द्वारा बनाये गए थे, जैसे राजस्थान, मध्य भारत आदि । इनके प्रमुख राजप्रमुख कहलाते थे ।

(3) सी श्रेणी - ये वे छोटे-छोटे राज्य थे, जिन्हें ब्रिटिश काल में चीफ कमिशनर के प्रान्त कहा जाता था जैसे अजमेर, दिल्ली ।



INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO FREE SAMPLE

- लार्ड माउन्टबेटन ने 3 जून 1947 को भारत विभाजन/डिकी बर्ड प्लान/बेंटन योजना प्रारंभ किया ।

इस अधिनियम की धारा 15 के अनुसार अब देशी रियासतें या तो भारत या पाकिस्तान में अपना विलय कर सकती थी या अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाये रख ..............................

**नोट** – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान _वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

**संपर्क करें –9694804063, 8504091672,98878090, 8382331957 18**

# राजस्थान का भूगोल

## अध्याय – 1

## सामान्य परिचय

प्रिय छात्रों, राजस्थान के भूगोल का अध्ययन करने के लिए हम इसे निम्न दो भागों में विभाजित करेंगे-

1. सामान्य परिचय
2. भौतिक स्वरूप

1. सामान्य परिचय-

प्रिय छात्रों, सामान्य परिचय के अंतर्गत हम राजस्थान के निम्न विषयों को विस्तार से समझेंगे-

(क) राजस्थान शब्द का उल्लेख
(ख) राजस्थान की स्थिति
(ग) राजस्थान का विस्तार
(घ) राजस्थान का आकार
(ङ) राजस्थान की आकृति

2. भौतिक स्वरूप - इसी प्रकार भौतिक स्वरूप के अंतर्गत हम निम्न विषयों को विस्तार से समझेंगे-

(क)पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश
(ख)अरावली पर्वतीय प्रदेश
(ग) पूर्वी मैदानी प्रदेश
(घ) दक्षिण पूर्वी पठारी प्रदेश

### 1. राजस्थान का परिचय

(क) राजस्थान शब्द का उल्लेख- राजस्थान- राजाओं का स्थान

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO FREE SAMPLE

प्रिय छात्रों, राजस्थान शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख राजस्थानी साहित्य विक्रम संवत 682 ई. में उत्कीर्ण बसंतगढ़ (सिरोही जिला) के शिलालेख में मिलता है।

मारवाड़ इतिहास के प्रसिद्ध लेखक "मुहणोत नैणसी"ने भी अपनी पुस्तक "नैणर्स री ख्यात" में भी राजस्थान शब्द का प्रयोग किया है, लेकिन इस पुस्तक में यह शब्द भौगोलिक प्रदेश राजस्थान के लिए प्रयुक्त हुआ नहीं लगता।

महर्षि वाल्मीकि ने राजस्थान की भौगोलिक क्षेत्र के लिए "मरुकान्तार" शब्द का उल्लेख किया है।

जॉर्ज थॉमस पहले ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने सन् 1800 ई. में इस भौगोलिक क्षेत्र को "राजपूताना" शब्द कहकर पुकारा । इस तथ्य का वर्णन विलियम फ्रैंकलिन ने अपनी पुस्तक "मिलिट्री मेमोरीज ऑफ़ मिस्टर थॉमस" में किया है।

**जॉर्ज थॉमस:-** जॉर्ज थॉमस एक आयरलैंड के सैनिक थे जो कि 18वीं. सदी में भारत आए और 1798 से 1801 तक भारत में एक छोटे से क्षेत्र (हिसार-हरियाणा) के राजा रहे। इन्होंने राजस्थान को "राजपूताना" शब्द इसलिए कहा क्योंकि मध्यकाल एवं पूर्व आधुनिक काल में राजस्थान में अधिकांश राजपूत राजवंशों का शासन था। ब्रिटिश काल में इस क्षेत्र को "राजपूताना" कहा जाता था।

विलियम फ्रैंकलिन:-विलियम फ्रैंकलिन मूल रूप से लंदन के निवासी थे। यह जॉर्ज थॉमस के घनिष्ट मित्र थे। उन्होनें 1805 जॉर्ज थॉमस के ऊपर "A Military Memories of George Thomas" नामक पुस्तक लिखी थी।

अकबर के नवरत्नों में से एक मध्यकालीन इतिहासकार "अबुल फजल" ने इस भौगोलिक क्षेत्र के लिए "मरुभूमि" शब्द का प्रयोग किया है।

1829 ईस्वी. में "कर्नल जेम्स टॉड" ने अपनी पुस्तक "एनाल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान" में सर्वप्रथम राजस्थान को "रजवाड़ा" या राजस्थान का नाम दिया था।

**कर्नल जेम्स टॉड:-** कर्नल जेम्स टॉड 1818 से 1821 के मध्य मेवाड़ (उदयपुर) प्रांत में एक पॉलिटिकल (राजनीतिक) एजेंट थे तथा कुछ समय तक मारवाड़ रियासत के ब्रिटिश

एजेंट भी रहे। कर्नल जेम्स टॉड यूनाइटेड किंगडम के मूल निवासी थे, उन्होनें अपने घोड़े पर घूम - घूम कर राजस्थान के इतिहास लेखन का कार्य किया इसलिए इन्हें घोड़े वाले बाबा के नाम से भी जाना जाता है।

कर्नल जेम्स टॉड को "राजस्थान के इतिहास का पितामह" कहा जाता है।

कर्नल जेम्स टॉड की पुस्तक एनाल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान" को "सेंट्रल एंड वेस्टर्न राजपूत स्टेट्स ऑफ इंडिया" के नाम से भी जानते हैं।

इस पुस्तक का पहली बार हिंदी अनुवाद राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहासकार "गौरीशंकर - हरीशचंद्र ओझा" ने किया था। इसे हिंदी में "प्राचीन राजस्थान का विश्लेषण" कहते हैं।

महाराज भीम सिंह ने कर्नल की सेवाओं से प्रभावित होकर गांव का नाम "टाडगढ़" रख दिया था, जो कालांतर में टाडगढ़ कहलाने लगा जो कि आज अजमेर जिलें की तहसील का मुख्यालय है।

प्रिय छात्रों, राजस्थान की स्थिति को हम सर्वप्रथम पृथ्वी पर तत्पश्चात एशिया में और फिर भारत में देखेंगे।

(1) राजस्थान की स्थिति "पृथ्वी" पर :- पृथ्वी पर राजस्थान की स्थिति को समझने से पहले निम्नलिखित अन्य महत्वपूर्ण बिंदुओं को समझना होगा-

(क)अंगारालैंड / युरेशियल प्लेट

(ख)गोंडवाना लैंड प्लेट

(ग) टेथिस सागर

(घ) पेन्जिया

(ङ) पैंथाल्जा

**नोटः-** प्रिय छात्रों, कृप्या ध्यान दें कि – आज से करोड़ों वर्ष पहले पृथ्वी सिर्फ दो हिस्सों में बटी हुई थी ।

1.स्थल

2.जल

जैसा कि आज भी है,  लेकिन वर्तमान में यदि हम स्थल मंडल को देखें तो हमें यह कई भागों में विभाजित हुआ दिखता है, जैसे सात महाद्वीप अलग-अलग हैं। उनके भी कई देश एक-दूसरे से काफी अलग अलग है इत्यादि। लेकिन बहुत पहले संपूर्ण स्थलमंडल सिर्फ एक ही था; इसी स्थलीय क्षेत्र को "पेन्जिया" के नाम से जानते थे तथा बाकी बचे हुए हिस्से को (जल वाले क्षेत्र को)"पेंथाल्जा" के नाम से जानते थे। अब इसे नीचे दिए गए मानचित्र से समझने की कोशिश कीजिए-

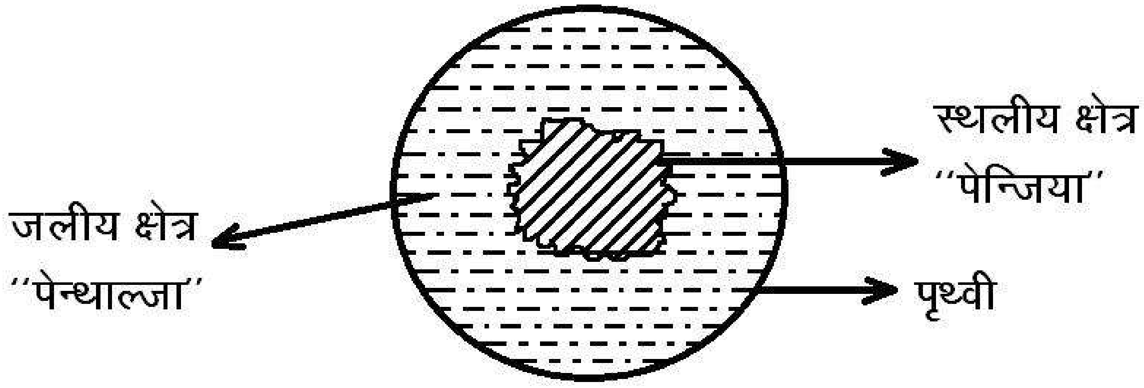


प्रिय छात्रों, पृथ्वी परिक्रमण एवं परिभ्रमण गति करती है अर्थात् अपने स्थान पर भी (1 दिन में) घूमती है, और सूर्य का चक्कर भी लगाती है। पृथ्वी की इस गति की वजह से स्थल मंडल की प्लेटों में हलचल होने की वजह से पेन्जिया (स्थलीय क्षेत्र)दो भागों में विभाजित हो गया जिसके उत्तरी भाग में उत्तरी अमेरिका, यूरोप और उत्तरी एशिया का निर्माण हुआ। इस स्थलीय क्षेत्र को "अंगारा लैंड / यूरेशियन प्लेट" के नाम से जानते हैं।

इसके दूसरे भाग (दक्षिणी) में दक्षिणी अमेरिका, दक्षिणी एशिया, अफ्रीका तथा अंटार्कटिका का निर्माण हुआ, इस क्षेत्र को "गोंडवाना लैंड"'प्लेट' के नाम से जानते हैं। दोनों प्लेटों के बीच में विशाल सागर था जिसे "टेथिस सागर" के नाम से जानते थे।- इसको नीचे दिए गए मानचित्र की सहायता से समझते हैं-

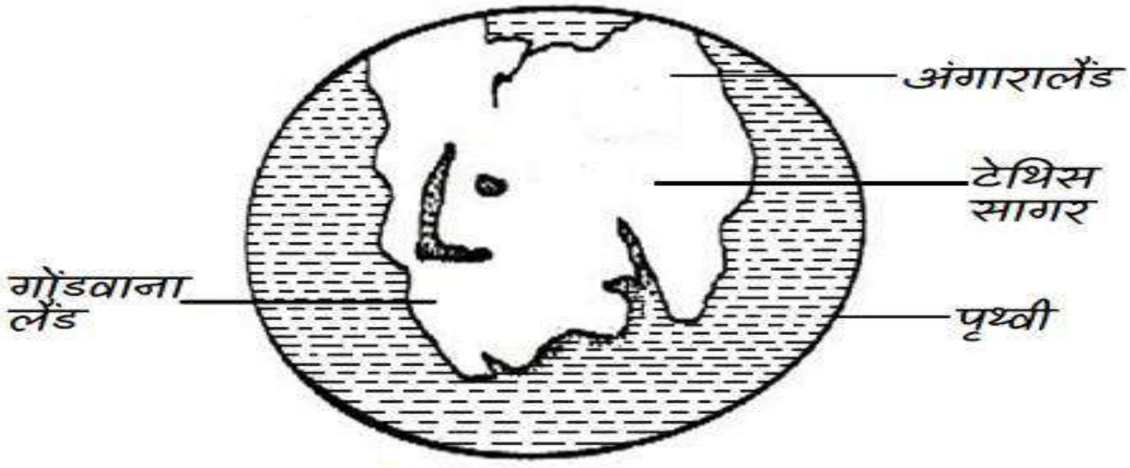


*नोटः- राजस्थान का पश्चिमी रेगिस्तान तथा रेगिस्तान में स्थित खारे पानी की झीलें "टेथिस सागर" के अवशेष है तथा राजस्थान का मध्यवर्ती पहाड़ी क्षेत्र (अरावली पर्वतमाला) एवं दक्षिण पूर्वी पठार भाग "गोंडवाना लैंड" प्लेट के हिस्से हैं।*

***टेथिस सागर :*** *- टेथिस सागर गोंडवाना लैंड प्लेट और युरेशियल प्लेट के मध्य स्थित एक सागर के रूप में कल्पित किया जाता है, जो कि एक छिछला और संकरा सागर था। और इसी में जमा अवसादों के प्लेट विवर्तनिकी के परिणामस्वरुप अफ्रीकी और भारतीय प्लेटों के यूरेशियन प्लेट के टकराने के कारण हिमालय और आल्प्स जैसे महान पहाड़ों की रचना हुई है।*

*प्रिय छात्रों, अब तक हम अंगारालैंड, गोंडवानालैंड, टेथिस सागर, पेंजिया तथा पेंथाल्जा का विश्लेषणात्मक अध्ययन कर चुके हैं। अब हम राजस्थान की स्थिति, पृथ्वी पर का अध्ययन करते हैं। नीचे दिए गए मानचित्रों को ध्यान से समझिए-*

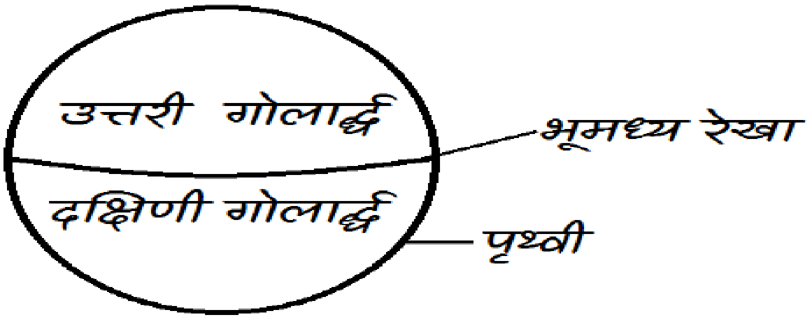


मानचित्र -1

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

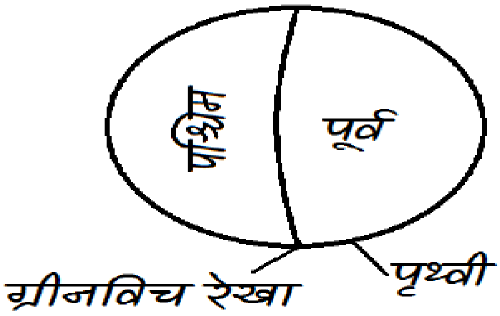


मानचित्र - 2

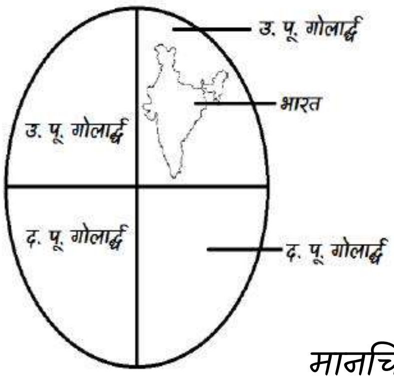


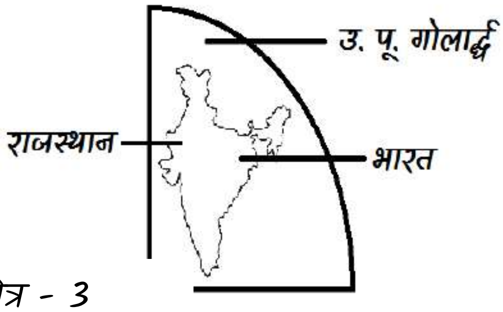


मानचित्र - 3

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय छात्रों ऊपर दिए गए मानचित्र के बारे में एक बार समझते हैं ।

मानचित्र-1 पृथ्वी को भूमध्य रेखा से दो भागों में बांटा गया है :-

1. उत्तरी गोलार्द्ध
2. दक्षिणी गोलार्द्ध

मानचित्र – 4

**नोट :-**

1. विश्व (अर्थात् पृथ्वी पर) में राजस्थान "उत्तर-पूरव" दिशा में ..............................

**नोट** – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान** _वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक" की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

**संपर्क करें –9694804063, 8233195718, 8504091672,9887809083**

## प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

| EXAM (परीक्षा) | DATE | हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न |
|---|---|---|
| RAS PRE. 2021 | 27 अक्तूबर | 74 (cut off- 64) |
| SSC GD 2021 | 16 नवम्बर | 68 (100 में से) |



FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

## • अरावली पर्वतमाला का विस्तार एवं स्थिति –

1. अरावली पर्वतमाला का उद्भव सबसे दक्षिण में अरब सागर में स्थित मिनिकॉय द्वीप (लक्षद्वीप) से माना जाता है अर्थात् अरावली की जड़ें अरब सागर से प्रारंभ होती हैं इसलिए अरब सागर को अरावली की "उत्पत्ति स्थल या पिता" कहा जाता है

2. भारत में अरावली पर्वतमाला का विस्तार दक्षिण-पश्चिम में गुजरात के "पालनपुर" नामक स्थान से उत्तर पूर्व में दिल्ली के "पालम" नामक स्थान पर समाप्त होती है यहां पर इन्हें "रायसीना की पहाड़ियों" के नाम से जाना जाता है इन्हीं रायसीना की पहाड़ियों पर "राष्ट्रपति भवन" बना हुआ है पालनपुर (गुजरात) से पालम (दिल्ली) तक इसकी कुल लंबाई 692 किलों मीटर है।

**राष्ट्रपति भवन -**

यह भारत के राष्ट्रपति का राजकीय निवास होता है यह अद्भुत एवं विशाल भवन रायसीना पहाड़ी जो कि अरावली पर्वत श्रेणी का हिस्सा है पर स्थित है । यह दुनिया की विशालतम इमारतों में से एक है राष्ट्रपति भवन वास्तु कला का उत्कृष्ट नमूना है । इस भवन के निर्माण की सोच सर्वप्रथम 1911 में उस समय उत्पन्न हुई जब दिल्ली दरबार ने निर्णय किया कि भारत की राजधानी कोलकाता से दिल्ली स्थानांतरित की जाएगी इसी समय यह भी निर्णय लिया गया था कि दिल्ली में ब्रिटिश वायसराय के रहने के लिए एक आलीशान भवन का निर्माण किया जाएगा । यह इमारत 330 एकड़ में फैली हुई है । इस विशाल इमारत का डिजाइन सर एडविन लुटियंस द्वारा तैयार किया गया था।

3. राजस्थान में अरावली पर्वतमाला का विस्तार सिरोही जिलें के "खेड ब्रह्मा" से झुंझुनू जिलें के "सिंघाना" (खेतड़ी) तक तथा दक्षिण की ओर अलवर तक है। राजस्थान में अरावली की कुल लंबाई 550 किलों मीटर है।

4. अरावली की कुल लंबाई का 79.48%(लगभग 80%) भाग राजस्थान में स्थित है । जिसका आकार एक वाद्ययंत्र "तानपुरे" के समान है। अरावली पर्वतमाला की तुलना



FREE SAMPLE

अमेरिका मे स्थित अल्पेशियन पर्वतों से की जाती है जो कि लगभग 60 से 55 करोड़ वर्ष पुराने हैं।

5. उत्पत्ति के आधार पर अरावली पर्वतमाला एक वलित पर्वत (जिसका विकास हो रहा है) तथा वर्तमान में एक अवशिष्ट पर्वत है। इसकी औसत ऊंचाई पहले 5000 मीटर थी जो कि वर्तमान में 920 मीटर समुद्र तल से है।
6. अरावली पर्वतमाला का विस्तार राज्य के 17 जिलों में है यह राज्य के लगभग बीच में स्थित है इसलिए राज्य को दो भागों में विभाजित करती है पूर्वी भाग व दक्षिणी भाग।
7. अरावली पर्वतमाला के पश्चिम में 13 जिलें आते हैं जिनमें से 12 में मरुस्थल है और एक जिला ऐसा है जो कि सिरोही है जिसमें मरुस्थल नहीं है अरावली के पश्चिम में लगभग 60% भू भाग पर राज्य की 40% जनसंख्या निवास करती है।
8. अरावली के पूर्व में राज्य के 20 जिलें आते हैं राजस्थान के कुल गैर मरुस्थलीय जिलें 21 है जिनमें से अरावली के पूर्व में 20 तथा एक सिरोही है।

1. अरावली का सर्वाधिक विस्तार उदयपुर जिलें में है तथा सबसे कम विस्तार वाला जिला अजमेर है और अरावली पर्वतमाला की सबसे ऊंची चोटी "गुरु शिखर" है और जबकि सबसे नीचे चोटी "अजमेर जिलें" में पुष्कर घाटी है।

| |
|---|
| गुरुशिखर जिसे गुरुमाथा भी कहा जाता है। हिमालय पर्वत के माउंट एवरेस्ट तथा पश्चिमी घाट के नीलगिरी पर्वत के मध्य की सबसे ऊंची चोटी है । कर्नल जेम्स टॉड ने यहां पर संतों को तपस्या करते हुए देखा था इससे प्रभावित होकर कर्नल जेम्स टॉड ने इसे संतो का शिखर का नाम दिया है । इसकी औसत ऊंचाई 1722 मीटर है। इसकी चोटी पर दत्तात्रेय ऋषि का मंदिर बना हुआ है, यदि इस मंदिर की ऊंचाई को शामिल करें तो गुरु शिखर की कुल ऊंचाई 1727 मीटर होती है । गुरुशिखर के नीचे राज्य का एकमात्र पर्वतीय पर्यटन स्थल "माउंट आबू" स्थित है । |

2. अरावली पर्वतमाला राज्य की नदियों को दो भागों में विभाजित करती है पश्चिमी भाग और पूर्वी भाग अरावली के पश्चिम में ...............................

**नोट** – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान _वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

**संपर्क करें –9694804063, 8233195718, 8504091672,9887809083**

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

# अध्याय – 3

# नदियां एवं झीलें

प्रिय छात्रों इस अध्याय के अंतर्गत हम लोग "राजस्थान का अपवाह तंत्र" के बारे में अध्ययन करेंगे। सबसे पहले जानते हैं कि क्या होता है "अपवाह तंत्र"?

**अपवाह तंत्र -**

जब नदी एक स्थान से दूसरे स्थान पर जल का प्रवाह करती है तब उसे अपवाह तंत्र कहते हैं ।अपवाह तंत्र में नदियां एवं उसकी सहायक नदियां शामिल होती हैं।

जैसे गंगा और उसकी सहायक नदियां मिल कर एक अपवाह तंत्र बनाती हैं उसी प्रकार सिंधु और उसकी सहायक नदियां जैसे झेलम, रावी, व्यास, चिनाब एक अपवाह तंत्र बनाती है, उसी प्रकार ब्रह्मपुत्र नदी और उसकी सहायक नदियां भी अपवाह तंत्र बनाती हैं। भारत की सबसे लंबी नदी गंगा है तथा सबसे बड़ा अपवाह तंत्र वाली नदी ब्रह्मपुत्र है। अब हम अध्ययन करेंगे राजस्थान के अपवाह तंत्र के बारे में।

राजस्थान में कई नदियां हैं जैसे लूनी, माही, बनास, चंबल इसके अलावा यहां पर स्थित कई झीलें भी इस अपवाह तंत्र में शामिल होती हैं ।प्रिय छात्रों जैसा कि आपको पता है राजस्थान में अरावली पर्वतमाला स्थित है यह राजस्थान के लगभग बीच में स्थित है इसलिए यह राज्य की नदियों को स्पष्ट रूप से दो भागों में विभाजित करती है। इसके पूर्व में बहने वाली नदियां अपना जल बंगाल की खाड़ी में तथा इसके पश्चिम में बहने वाली नदियां अपना जल अरब सागर में लेकर जाती है । राजस्थान के अपवाह तंत्र को हम दो भागों में विभक्त करेंगे फिर उनके अन्य क्रमशः 4 एवं 3 उप-भाग होंगे -

1. क्षेत्र के आधार पर वर्गीकरण
2. अपवाह के आधार पर वर्गीकरण

**1. क्षेत्र के आधार पर वर्गीकरण को चार भागों में बांटा गया है -**

INFUSION NOTES
A WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

(अ) उत्तरी व पश्चिमी राजस्थान- इस तंत्र में लूनी, जवाई, सूकड़ी, बांडी, सागी जोजड़ी घग्घर, कातली नदियाँ शामिल होती है ।

(ब )दक्षिणी -पश्चिमी राजस्थान - इसमें पश्चिमी बनास, साबर मती, वाकल, आदि शामिल होती है ।

(स )दक्षिणी राजस्थान - इसमें माही .....................

**नोट** – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान** _**वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

**संपर्क करें –9694804063, 8504091672,8233195718, 9887809083**

FREE SAMPLE

प्रिय छात्रों अब हम प्रत्येक अपवाह तंत्र को विस्तृत रूप से समझते हैं । सबसे पहले हम बंगाल की खाड़ी की ओर चले जाने वाली नदियों का अध्ययन करेंगे –

1. **चंबल नदी** –प्रिय छात्रों चंबल नदी के बारे में हम समझते हैं कि क्या है इसकी महत्वपूर्ण विशेषताएं -

- चंबल नदी राजस्थान की एक मात्र ऐसी नदी है जो प्राकृतिक अंतर्राज्यीय सीमा निर्धारित करती है इस नदी को अन्य नामों से भी जाना जाता है इसके अन्य नाम है, चर्मणवती नदी, कामधेनु नदी, बारह मासी नदी, नित्य वाहिनी नदी ।
- इस नदी की कुल लंबाई 966 किलों मीटर है। यह नदी मध्यप्रदेश, राजस्थान व उत्तरप्रदेश अर्थात् 3 राज्यों में बहती है यह नदी मध्यप्रदेश में 335 किलों मीटर, राजस्थान में 135 किलों मीटर, उत्तरप्रदेश में 275 किलों मीटर बहती है यह नदी राजस्थान, मध्यप्रदेश तथा उत्तरप्रदेश के मध्य 241 किलों मीटर की अंतर्राज्यीय सीमा भी बनाती है।
- इस नदी का उद्गम स्थल मध्यप्रदेश राज्य के इंदौर जिलें हुआ । क्षेत्र के विंध्याचल पर्वतमाला में स्थित 616 मीटर ऊंची "जाना पाव की पहाड़ी" से होता है मध्यप्रदेश में मंदसौर जिला में स्थित रामपुरा भानपुरा के पठारों में स्थित इस नदी का सबसे बड़ा बांध "गांधी सागर बांध" बना हुआ है।
- यह नदी राजस्थान में सर्वप्रथम चित्तौड़गढ़ जिलें में स्थित चौरासीगढ़ नामक स्थान से प्रवेश करती है इस नदी पर भैंसरोडगढ़ के समीप सबसे बड़ा सबसे ऊंचा जल प्रपात बना है जिसे चूलिया जल प्रपात के नाम से जानते हैं।
- चंबल नदी पर चित्तौड़गढ़ जिलें के रावतभाटा नामक स्थान पर राणाप्रताप सागर बांध बना हुआ है, जो कि जल भराव की क्षमता से राज्य का सबसे बड़ा बांध है इस बांध का 113 वर्ग किलों मीटर में फैला हुआ है।
- चंबल नदी चित्तौड़गढ़ जिलें में बहने के बाद कोटा जिलें में प्रवेश करती है, कोटा जिलें में इस नदी पर जवाहर सागर व कोटा बैराज बांध बना हुआ है कोटा बैराज बांध जल विद्युत उत्पादन के लिए उपयोग में नहीं लिया जाता । कोटा जिलें के नानौरा

नामक स्थान पर "काली सिंध नदी" चंबल में आकर मिल जाती है यह स्थान प्राचीन काल में कपिल मुनि की तपस्या स्थली रहा था।

- कोटा तथा बूंदी जिलें की सीमा निर्धारित करती हुई यह नदी बूंदी जिलें में प्रवेश करती है बूंदी जिलें की केशोरायपाटन नामक स्थान पर इस नदी का सर्वाधिक गहरा भाग है जो ।।3 मीटर की गहराई तक है बूंदी जिलें से आगे चल कर यह नदी कोटा तथा सवाईमाधोपुर की सीमा निर्धारित करती है।
- सवाईमाधोपुर जिलें के खंडार तहसील के रामेश्वर नामक स्थान पर बनास तथा सीप नदी चंबल में आकर मिलती है तथा यहां त्रिवेणी संगम बनाते हैं। सवाई माधोपुर जिलें के पालिया नामक स्थान पर चंबल नदी की सहायक नदी पार्वती इसमें आकर मिलती है। धौलपुर जिलें के पीलहाट होते हुए यह नदी राजस्थान से बाहर निकलती है और उत्तरप्रदेश राज्य में प्रवेश कर जाती है।
- अंत में यह नदी उत्तरप्रदेश राज्य के इटावा जिलें के मुरादगंज कस्बे में 275 किलों में किलों मीटर बहने के बाद यमुना में मिल जाती है यह यमुना की सबसे बड़ी सहायक नदी है।

**चंबल नदी से संबंधित अन्य तथ्य -**

- चंबल नदी राज्य के कुल अपवाह क्षेत्र का 20.90% भाग मे है। यह नदी "गागेयसूस" नामक स्तनपाई जीव के लिए प्रसिद्ध है।
- चंबल यूनेस्को की विश्व धरोहर के लिए नामित राज्य की एकमात्र नदी है बहाव क्षमता की दृष्टि से राज्य की सबसे लंबी नदी चंबल ही है।
- यह सर्वाधिक सतही जल वाली नदी है इसीलिए इसे "वाटरसफारी नदी" भी कहा जाता है।
- चंबल नदी से सर्वाधिक ..............

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

संपर्क करें –9694804063, 8504091672,8233195718, 9887809083

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

.................अब हम खारे पानी की झीलों को सबसे पहले विस्तार में समझते हैं और फिर मीठे पानी की झीलों को पढ़ेंगे।

**(अ) खारे पानी की झीले –**

**1. सांभर झील:-**

- राजस्थान के जयपुर – फुलेरा मार्ग पर जयपुर से लगभग 65 किलोमीटर दूर स्थित सांभर झील भारत की सबसे बड़ी प्राकृतिक एवं खारे पानी की झील है।
- इस झील का विस्तार 3 जिलों में है - जयपुर, अजमेर और नागौर, लेकिन सर्वाधिक विस्तार जयपुर जिलें में है और इसका प्रशासनिक अधिकार नागौर जिलें का है।

- इस झील की लंबाई दक्षिण पूरब से उत्तर पश्चिम की ओर लगभग 32 किलों मीटर है और चौड़ाई 3 से 12 किलोमीटर है इसका कुल अपवाह क्षेत्र 500 वर्ग किलोमीटर है।
- सांभर झील में मेंथा नदी, रूपनगढ़ नदी, खारी नदी और खंडेला नदी आकर मिलती हैं ।इस झील पर भारत सरकार की "हिंदुस्तान साल्ट लिमिटेड कंपनी" द्वारा उत्पादन कार्य किया जा रहा है ।इस झील में प्रति 4 मीटर की गहराई पर 350 लाख टन उत्पादन होता है जो भारत के कुल उत्पादन का 8.7% सांभर झील से ही उत्पादित होता है।

**इस झील से संबंधित अन्य महत्वपूर्ण तथ्य -**

●सांभर झील "स्वाईसरुबीना"नामक शैवालों के लिए प्रसिद्ध है ।इस शैवाल से 60% प्रोटीन प्राप्त होता है।

● यह झील अन्य महत्वपूर्ण बिन्दुओं के लिए भी जानी जाती है जैसे -

तीर्थ स्थली देव्यानी अर्थात् तीर्थों की नानी,
शाकंभरी माता का मंदिर,
संत हिमामुद्दीन की पुण्य भूमि,
जहांगीर का ननिहाल,
अकबर की विवाह स्थली, चौहानों की राजधानी

- ऐसा माना जाता है कि इस झील का निर्माण बिजोलिया शिलालेख के अनुसार चौहान वंश के संस्थापक वासुदेव चौहान द्वारा करवाया गया था।
- इस झील का आकार आयताकार है । इस झील पर सन् 1857 में अंग्रेजों द्वारा स्थापित सांभर साल्ट म्यूजियम स्थित है।
- पर्यटन के क्षेत्र में रामसर साइट के नाम से भी इसे जाना जाता है।

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

**2. पचपदरा झील:-**

- ऐसा माना जाता है कि 400 ईसा पूर्व पंचानामक एक भील व्यक्ति के द्वारा एक दलदल को सुखाकर इस झील के आस - पास की बस्तियों का निर्माण करवाया गया था इसलिए इस झील को पचपदरा झील कहते हैं
- यह झील राजस्थान राज्य के बाड़मेर जिलें के बालोतरा में स्थित है।
- इस झील से प्राचीन समय से ही खारवाल जाति के 400 परिवार मोरली वृक्ष...........................

**नोट** – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान _वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

**संपर्क करें –9694804063, 8233195718, 8504091672,9887809083**

FREE SAMPLE

# राजस्थान के प्राकृतिक संसाधन

## अध्याय – 10

## राजस्थान में खनिज

प्रिय छात्रों इस अध्याय के अंतर्गत हम राजस्थान में पाए जाने वाले प्रमुख खनिज संसाधनों का अध्ययन करेंगे सबसे पहले हम समझते हैं कि खनिज संसाधन किसे कहते हैं।

**खनिज**

खनिज या खनिज पदार्थ ऐसे भौतिक पदार्थ हैं जो खान से खोद कर निकाले जाते हैं । कुछ उपयोगी खनिज पदार्थों के नाम हैं – लोहा, अभ्रक, कोयला, बॉक्साइट (जिससे एल्युमिनियम बनता है), नमक (पाकिस्तान व भारत के अनेक क्षेत्रों में खान से नमक निकाला जाता है), जस्ता, चूना पत्थर इत्यादि ।

पृथ्वी की भू - पट्टी में पाई जाने वाली यौगिक जिनमें धातुओं की मात्रा पाई जाती है, वह खनिज कहलाते हैं।

ऐसे खनिज जिनमें धातु की मात्रा अधिक होती है तथा उनसे धातुओं का निष्कर्षण करना आसान होता है उन्हें अयस्क कहते हैं।

जैसे-

| **धातु** | **अयस्क** |
|---|---|
| हेमेटाइट | लोहा |
| बॉक्साइट | एल्युमिनियम |
| गैलेना | शीशा |
| डोलोमाइट | कैल्शियम |
| सिडेराइट | लौहा |
| मेलेकाइट | तांबा |

**खनिजों के प्रकार**

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO FREE SAMPLE

खनिज तीन प्रकार के होते हैं; धात्विक, अधात्विक और ऊर्जा खनिज।

**धात्विक खनिज:**

लौह धातु: लौह अयस्क, मैंगनीज, निकेल, कोबाल्ट, आदि।

अलौह धातु: तांबा, लेड, टिन, बॉक्साइट, आदि।

बहुमूल्य खनिज: सोना, चाँदी, प्लैटिनम, आदि।

**अधात्विकखनिज:**

अभ्रक, लवण, पोटाश, सल्फर, ग्रेनाइट, चूना पत्थर, संगमरमर, बलुआ पत्थर, आदि।

**ऊर्जा खनिज**: कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस ।

**राजस्थान में खनिज संसाधन –**

प्रिय छात्रों राजस्थान में कई प्रकार के खनिज पाए जाते हैं।

जैसा कि आपको पता है राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है यहां पाई जाने वाली अधिक विविधताओं के कारण या यह राज्य खनिज संपदा की दृष्टि से एक संपन्न राज्य है । और इसी वजह से इसे "खनिजों का अजायबघर" भी कहा जाता है । दोस्तों खनिज भंडार की दृष्टि से राजस्थान का देश में झारखंड के बाद दूसरा स्थान आता है जबकि खनिज उत्पादन मूल्य की दृष्टि से झारखंड, मध्यप्रदेश, गुजरात, असम के बाद राजस्थान का पांचवा स्थान है । राजस्थान में कुल होने वाले देश के खनन क्षेत्र का 5.7% क्षेत्रफल आता है । देश में सर्वाधिक खाने राजस्थान में स्थित है । देश के कुल खनिज उत्पादन में राजस्थान का योगदान 22% है।

राजस्थान में 80 से अधिक खनिज पाए जाते हैं आइए जानते हैं कौन - कौन से खनिज यहां पाए जाते हैं।

1. ऐसे खनिज जिन पर राजस्थान का एकाधिकार है -

पन्ना, जास्पर, तामड़ा, वोलेस्टोनाइट

2. ऐसे खनिज जिनके उत्पादन में राजस्थान का प्रथम स्थान है -



FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें -9694804063, 8233195718, 8504091672,9887809083

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

- **अभ्रक**

- अभ्रक आग्नेय एवं कायान्तरिक चट्टानों में टुकड़ों के रूप में पाया जाता है।
- इसका उपयोग विद्युत उद्योगों में, सजावटी सामानों में एवं ताप भट्टियों में किया जाता है।
- यह ताप का कुचालक होता है।
- **माइकेनाइट उद्योग-** अभ्रक के चूरे से ईंट तथा चादरें बनाने वाले उद्योग को माइकेनाइट उद्योग कहा जाता है।
- इस उद्योग के सर्वाधिक कारखाने भीलवाड़ा जिलें में पाये जाते है।

**रूबी अभ्रक :-**

- सफेद अभ्रक को रूबी अभ्रक भी कहा जाता है।

**बायोटाइट अभ्रक :-**

- गुलाबी अभ्रक को बायोटाइट अभ्रक भी कहा जाता है।
- इसका उपयोग दवाईयाँ, सजावटी सामान, वायुयान एवं ताप भट्टियों में किया जाता है।

**प्रमुख क्षेत्र :-**

- भीलवाड़ा- शाहपुरा, कोटला, फुलिया, नटकीखेड़ी।
- अभ्रक का सर्वाधिक उत्पादन भीलवाडा में होता है
- अजमेर- ब्यावर, जालिया, भिनाय
- उदयपुर
- जयपुर- बंजारी खान
- राजस्थान का उत्पादन की दृष्टि से तीसरा स्थान है।

**रॉक फास्फेट**

- जिन चट्टानों में ट्राईकैल्सियम फास्फेट का प्रतिशत अधिक पाया जाता है उन्हें रॉक फास्फेट चट्टान कहा जाता है।
- इसका उपयोग रासायनिक खाद के उत्पादन में अत्यधिक किया जाता है।

**क्षेत्र**

- झामरकोटड़ा (उदयपुर)-देश की सबसे बडी रॉक फास्फेट खान
- इसके अलावा उदयपुर के माटोन, कानपुरा, नीमच आदि से भी इनका उत्पादन होता है।
- जैसलमेर- लाठी, सीरिग, बिरमानिया क्षेत्र, फतेहगढ
- जयपुर- अचरोल
- सीकर- करपुरा

**एस्बेस्टॉस (९०%) (मिनरलसिल्क)**

- उपयोग- सीमेंट, चादर, रेल के डिब्बे, जहाज, टाइल्स।
- एस्बेस्टॉस के दो प्रकार होते हैं-
- काइसोलाइट
- इम्फीबॉल- यह घटिया किस्म का एस्बेस्टॉस राजस्थान में पाया जाता है।

**प्रमुख क्षेत्र :**

- उदयपुर- खेरवाड़ा, ऋषभदेव, सलूम्बर

राजसमन्द- ........................................

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

**नोट** – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान _वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

**संपर्क करें –9694804063, 8233195718, 8504091672,9887809083**

# राजस्थान समय सामयिकी (करंट अफेयर्स)

## मार्च -

1. भरतपुर की नीतिशा अग्रवाल (9 वर्ष) नॉनस्टॉप डांस में एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड में नाम दर्ज कराने वाली भारत की पहली बच्ची बनी है। उन्होंने एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड में ग्रांड मास्टर का टाइटल प्राप्त किया।
2. 1 मार्च को राज्य कोविड-19 टीकाकरण कोविन 2.0 शुरू हो गया।

   इस चरण में 60 वर्ष से अधिक और 45 से 60 वर्ष के बीच की आयु वाले गंभीर बीमारी के शिकार लोगों को टीका लगाया जा रहा है।

3. स्वच्छ मशहूर स्थलों की सूची

   जल शक्ति मंत्रालय के पेयजल और स्वच्छता विभाग ने स्वच्छ मशहूर स्थलों के चौथे चरण के तहत देश के 12 स्थानों को चुना है। इनमें राजस्थान के कुंभलगढ़, जैसलमेर किला और रामदेवरा को चुना गया है।

4. मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने 24 फरवरी को बजट में अनाथ, उपेक्षित बच्चों के पुनर्वास के लिए गोरा धाय ग्रुप फोस्टर केयर संचालन की योजना रखी।

➢ यह योजना पूरे 33 जिलों में शुरू की जाए ।

5. पाली के जैतारण तहसील के खेड़ा रामगढ़ गाँव की मोनिका पटेल का इंडिया की वनडे और टी-20 टीम में चयन हुआ है।
6. ड्राइविंग लाइसेंस पर ऑर्गन डोनेशन की इच्छा अंकित करने वाला राजस्थान देश का पहला राज्य है।
7. राजस्थान में 5 अगस्त 2011 को फूड सेफ्टी एक्ट लागू हुआ। लागू होने के 10 साल में एक भी मिलावटखोर को सजा नहीं मिली है।

➢ मौजूदा प्रावधान में मिलावटिओं को जमानत पर छोड़ने की व्यवस्था है।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

- हाल ही मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने मिलावट और नकली दवाओं पर रोक लगाने के लिए क्रिमिनल लॉ (राजस्थान संशोधन) एक्ट 2021 को विधानसभा में पेश किया है।
- राष्ट्रपति से मंजूरी मिलने के बाद यह कानून लागू हो जाएगा।

**8.** 8 मार्च को राजस्थान और गुजरात के पूर्व राज्यपाल जस्टिस अंशुमान सिंह का निधन हो गया। अंशुमान सिंह ने जनवरी 1999 से 2003 तक राजस्थान के राज्यपाल के रूप में कार्य किया था।

राजस्थान में डेनमार्क के सहयोग से ..........................

**नोट** – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान _वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

**संपर्क करें –9694804063, 8504091672, 8233195718,9887809083**

## अगस्त -

(1) मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने 1 अगस्त को 'घर-घर औषधि योजना' एवं 72वें वन महोत्सव का शुभारम्भ किया।

- इस योजना के तहत वन विभाग की ओर से आगामी पांच वर्षों में प्रदेश के सभी 1 करोड़ 26 लाख परिवारों को तुलसी, गिलोय, कालमेघ और अश्वगंधा के आठ-आठ औषधीय पौधे तीन बार निःशुल्क उपलब्ध कराए जाएंगे।
- योजना का उद्देश्य:- प्रदेश के लोगों की स्वास्थ्य की रक्षा करना तथा औषधीय पौधों का संरक्षण और संवर्द्धन करना है।
- वन राज्य मंत्री - सुखराम विश्नोई।
- साथ ही मुख्यमंत्री ने 72 वें वन महोत्सव के तहत जयपुर के ग्राम बिलौंची में लगाने के लिए पीपल का पौधा और अन्य पौधों के वाहन को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया।
- प्रदेश में लघु वन उपज उत्पादन वृद्धि के लिए राज्य वन विकास निगम का गठन किया गया है। साथ ही ताल छापर अभ्यारण्य में वन्यजीव प्रबंधन प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किया जा रहा है।

(2)हाल ही राजस्थान सरकार के उद्योग विभाग और राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास और निवेश निगम (RIICO) ने राज्य में इच्छुक निर्यातकों को बढ़ावा देने के लिए 'निर्यातक बनो' अभियान शुरू किया है।

(3) आईआईटी जोधपुर में राजस्थान का पहला डूसेन मस्कुलर डिस्ट्रॉफी सेंटर स्थापित किया गया है।

(4) कन्या भ्रूण हत्या रोकने के लिए मुखबिर योजना के तहत प्रोत्साहन राशि ढाई लाख रुपये से तीन लाख रुपए बढा दी गई है।

(5)चिकित्सा मंत्री रघु शर्मा ने अर्ली कैंसर डिटेक्शन वैन का शुभारंभ किया है। इस वैन द्वारा कैंसर से संबंधित महत्वपूर्ण जांचें मौके पर ही की जा सकेंगी।

(6)प्रदेश के 6 जिलों में जिला परिषद् एवं पंचायत समिति सदस्यों के आम चुनाव की घोषणा

राज्य निर्वाचन आयोग ने प्रदेश के 6 जिलों (भरतपुर, दौसा, जयपुर, जोधपुर, सवाईमाधोपुर एवं सिरोही) के जिला परिषद् एवं पंचायत समिति सदस्यों के आम चुनाव की घोषणा कर दी है। 3 चरणों में होने वाले चुनाव के लिए 26 अगस्त, 29 अगस्त और 1 सितंबर को मतदान होगा, जबकि 4 सितंबर को संबंधित जिला मुख्यालयों पर मतगणना करवाई जाएगी। चुनाव कार्यक्रम की घोषणा के साथ ही इन सभी 6 जिलों के जिला परिषद् एवं पंचायत समिति निर्वाचन क्षेत्रों में आदर्श आचरण संहिता के प्रावधान तुरन्त प्रभाव से लागू हो गए हैं, जो चुनाव प्रक्रिया समाप्ति तक लागू रहेंगे।

(7) डॉ. सतीश कुमार गर्ग राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति बने हैं।

(8) ग्रामीण खेल

- राजस्थान सरकार अक्टूबर-नवंबर 2021 में 44795 राजस्व गांवों में 6 तरह के खेल आयोजित करेगी।
- इसके बाद 11341 ग्राम पंचायतों का मुकाबला होगा।
- जो गाँव में स्टेट लेवल पर विजेता बनेगा उसे क्षेत्र को ईनाम स्वरुप में स्टेडियम दिया जाएगा।
- राजस्थान ऐसे खेल आयोजित करने वाला देश का पहला राज्य बनेगा।

6 खेल:-

1. हॉकी 2.कबड्डी

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO FREE SAMPLE

3. खो-खो (महिला)

4. टेनिस बॉल क्रिकेट

5. शूटिंगबॉल 6. वालीबॉल

(9) आईपीएस नीना सिंह राजस्थान पुलिस की पहली महिला डीजी (महानिदेशक) बनी है।

(10) 6 अगस्त 2021 को राजस्थान को वन धन योजना में ......................

**नोट** – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान** _**वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

**संपर्क करें –9694804063, 8504091672, 8233195718,9887809083**

FREE SAMPLE

नोट – प्रिय दोस्तों, आगे के माह की करंट अफेयर्स पढने के लिए हमारे दिए गये नम्बरों पर काल करें , आपको ये pdf फॉर्मेट में फ्री में दी जाएगी /

## राजस्थान की प्रमुख योजनाएँ 2021 -

अल्पसंख्यक मामलात मंत्री शाले मोहम्मद के अनुसार नववर्ष 2021 के आगाज पर 'मुख्यमंत्री मदरसा आधुनिकीकरण योजना' के तहत 36 मदरसों को विनिर्माण कार्यों के लिए 538 लाख रुपये की प्रशासनिक स्वीकृति जारी की गई है।

- **कालीबाई भील मेधावी छात्रा स्कूटी योजना 2021**

- पहली बार इस योजना में सीबीएसई की छात्राओं को भी शामिल किया गया है। अब इस योजना में सीबीएसई की छात्राओं की हिस्सेदारी 25% की रहेगी।
- गौरतलब है, कि इससे पहले इस योजना में केवल राजस्थान बोर्ड से पास छात्राओं को ही शामिल किया जाता था ।
- इस बार 10,050 स्कूटियों का वितरण होगा।
- मुख्यमंत्री गहलोत ने वर्ष 2019 - 20 के बजट में इसकी घोषणा की थी।
- कालीबाई भील मेधावी छात्रा स्कूटी योजना 2021 में सभी वर्गों की 12वीं पास मेधावी छात्राओं को सरकार मुफ्त स्कूटी देगी।

**ओलंपिक में स्वर्ण जीतने पर मिलेंगे 3 करोड़ रुपए**

- मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने ओलंपिक, एशियाई तथा राष्ट्रमंडल जैसे अंतर्राष्ट्रीय खेलों में पदक जीतने पर प्रदेश के खिलाड़ियों को दी जाने वाली इनामी राशि में 3 से 4 गुना तक बढ़ोतरी करने का फैसला किया है।
- अब ओलंपिक में स्वर्ण जीतने पर 3 करोड़ रुपए मिलेंगे।
- रजत पदक विजेता को 2 करोड़ रुपए और कांस्य पदक विजेता को 1 करोड़ रुपए की इनामी राशि दी जाएगी।
- एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक विजेता को 1 करोड़ रुपए की इनामी राशि दी जाएगी।
- राजस्थान में 18 जनवरी 2021 से बाल आयोग आपके द्वार अभियान शुरू किया जाएगा। इस अभियान की शुरुआत अलवर जिलें से की जाएगी।
- 7 जनवरी को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वर्चुअल कार्यक्रम के तहत वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर योजना के पहले चरण के तहत रेवाड़ी - मदार खंड को देश को समर्पित किया।
- मोदी ने न्यू अटेली स्टेशन से देश की पहली 1.5 किमी लंबी डबल स्टैक इलेक्ट्रिक कंटेनर ट्रेन (मालगाड़ी) को हरी झंडी दिखाकर राजस्थान के न्यू किशनगढ़ स्टेशन के लिए रवाना किया। यह मालगाडी हरियाणा के न्यू रेवाड़ी से अजमेर के न्यू किशनगढ़ मदार तक बने 306 किमी लंबे ट्रैक पर चलाई गई।
- इस योजना के तहत कुल 1504 किलोमीटर का ट्रैक तैयार होना है, जो दादरी से जवाहरलाल नेहरू बंदरगाह तक जाएगा। हरियाणा से 177 किमी, राजस्थान से 566 किमी, गुजरात से 565 किमी, महाराष्ट्र से 177 किमी और उत्तर प्रदेश से 18 किमी ट्रैक निकलेगा।
- 30 जनवरी 2021 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्यतिथि के अवसर पर राजस्थान में आयुष्मान भारत महात्मा गाँधी राजस्थान स्वास्थ्य बीमा योजना के नवीन चरण को लागू किया गया हैं।
- इसके तहत लोगों को 5 लाख रुपए तक का वार्षिक बीमा कवर दिया जाएगा।

कौन होंगे पात्र:- इसके तहत सामाजिक आर्थिक जनगणना 2011 के ..............................

# मनोविज्ञान एवं शिक्षाशास्त्र

दोस्तों , मनोविज्ञान एक ऐसा विज्ञान है जो प्राणियों के व्यवहार एवं मानसिक तथा दैहिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है। व्यवहार में मानव व्यवहार के साथ-साथ पशु-पक्षियों के व्यवहार को भी सम्मिलित किया जाता हैं।

- "मनोविज्ञान" शब्द का शाब्दिक अर्थ है- मन का विज्ञान अर्थात् मनोविज्ञान अध्ययन की वह शाखा है जो मन का अध्ययन करती है। मनोविज्ञान शब्द अंग्रेजी भाषा के Psychology शब्द से बना है।
- 'साइकॉलोजी' शब्द की उत्पति यूनानी(लैटिन) भाषा के दो शब्द 'साइकी(Psyche) तथा लोगस(Logos) से मिलकर हुई है। 'साइकी' शब्द का अर्थ -आत्मा है जबकि लोगस शब्द का अर्थ -अध्ययन या ज्ञान से है
इस प्रकार से हमने समझा की अंग्रेजी शब्द "साइकॉलोजी" का शाब्दिक अर्थ है- आत्मा का अध्ययन या आत्मा का ज्ञान।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO FREE SAMPLE

### अब हम मनोविज्ञान की कुछ विचारधाराओं को समझते हैं –

1. **मनोविज्ञान आत्मा का विज्ञान-** यह मनोविज्ञान की प्रथम विचारधारा है जिसका समय आरम्भ से 16वीं सदी तक माना जाता है। इस विचारधारा के समर्थक प्लेटो, अरस्तू, देकार्ते, सुकरात आदि को माना जाता है। यूनानी दार्शनिकों ने मनोविज्ञान को आत्मा के विज्ञान के रूप में स्वीकार किया है। साइकॉलोजी शब्द का शाब्दिक अर्थ भी "आत्मा के अध्ययन" की ओर इंगित करता है।

2. **मनोविज्ञान मन/मस्तिष्क का विज्ञान** -यह मनोविज्ञान की दूसरी विचारधारा है जिसका समय 17 वीं से 18वीं सदी तक माना जाता है। इस विचारधारा के समर्थक जॉन लॉक, पेम्पोलॉजी, थॉमस रीड आदि थे। आत्मा के विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान की परिभाषा के अस्वीकृत हो जाने पर मध्ययुग (17वी शताब्दी) के दार्शनिकों ने मनोविज्ञान

को मन के विज्ञान के रूप में परिभाषित किया। इनमें मध्ययुग के दार्शनिक पेम्पोलॉजी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

3. **मनोविज्ञान चेतना का विज्ञान** - यह मनोविज्ञान की तीसरी विचारधारा है जिसका समय 19वीं शताब्दी माना जाता है। इस विचारधारा के समर्थक विलियम वुट, ई.बी.टिचनर, विलियम जेम्स, आदि को माना जाता है। मनोवैज्ञानिकों के द्वारा मन या मस्तिष्क के विज्ञान की जगह मनोविज्ञान को चेतना के विज्ञान के रूप में व्यक्त किया गया। टिचनर, विलियम जेम्स, विलियम वुट आदि विद्वानों ने मनोविज्ञान को चेतना के विज्ञान के रूप में स्वीकार करके कहा कि मनोविज्ञान चेतन क्रियाओं का अध्ययन करता है।

4. **मनोविज्ञान व्यवहार का विज्ञान** - यह मनोविज्ञान की नवीनतम विचारधारा है जिसका समय बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से आज तक माना जाता है।यह मनोविज्ञान की सबसे महत्वपूर्ण विचारधारा हैं। इस विचारधारा के समर्थक वाट्सन, वुडवर्थ, स्किनर आदि को माना जाता है। मनोविज्ञान को व्यवहार के विज्ञान के रूप में स्वीकार किया जाने लगा। वाट्सन, वुडवर्थ, स्किनर आदि मनोवैज्ञानिकों ने मनोविज्ञान को व्यवहार के एक निश्चित विज्ञान के रूप में स्वीकार किया। वर्तमान समय में मनोविज्ञान की इस विचारधारा को ही एक सर्वमान्य विचारधारा के रूप में स्वीकार किया जाता है।

## मनोविज्ञान की परिभाषाएं -

**वुडवर्थ** –"सर्वप्रथम मनोविज्ञान ने अपनी आत्मा को छोड़ा। फिर इसने अपने मन को त्यागा। फिर इसने चेतना खोई। अब वह व्यवहार को अपनाये हुए है।

**वाटसन-** "मनोविज्ञान व्यवहार का शुद्ध विज्ञान है।"

**मैक्डूगल** – "मनोविज्ञान व्यवहार एवं ......................

**नोट** – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान**

# अध्याय – 2

# वृद्धि एवं विकास की संकल्पना

## बाल विकास -

**अर्थ :-** गर्भकाल से लेकर परिपक्व अवस्था तक का अध्ययन बाल विकास कहलाता है।

**परिभाषा :-**

**क्रो एण्ड क्रो के अनुसार -** बाल मनोविज्ञान वह वैज्ञानिक अध्ययन है जिसमें गर्भकाल से लेकर किशोरावस्था के मध्य तक का अध्ययन किया जाता है।

**जेम्स ड्रेवर के अनुसार -** बाल मनोविज्ञान मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसमें जन्म से लेकर परिपक्व अवस्था तक विकासशील मानव का अध्ययन किया जाता है।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

## बाल विकास का इतिहास :-

रूसो ने पुस्तक - EMILE में बच्चों की शिक्षा का अध्ययन किया है।

काल्पनिक शिष्य का नाम भी EMILE है

बाल विकास का वैज्ञानिक अध्ययन करने वाला व्यक्ति - पेस्टोलोजी, 1774

बाल अध्ययन आंदोलन की शुरुआत - अमेरिका में 1893, स्टेनले हॉल।

(स्टेनले हॉल ने बाल अध्ययन समिति और बालक कल्याण संगठन की स्थापना की तथा पेड़ोलोजिकल सेमीनरी नामक पत्रिका में बाल विकास का अध्ययन किया है।)

प्रथम बाल सुधार गृह की स्थापना - अमेरिका (न्यूयार्क) में 1887

प्रथम बाल निदेशन केंद्र - विलियम हीली - शिकागो 1909

भारत में बाल अध्ययन की शुरुआत - 1930

**अभिवृद्धि (Groth)** – सामान्य रूप से व्यवहारिक शब्दावलियो में जिस के लिए वृद्धि का प्रयोग किया जाता हैं। वह प्रक्रिया मनोवैज्ञानिक परिक्षेपो में अभिवृद्धि की प्रक्रिया कहलाती है।

- अभिवृद्धि की प्रक्रिया के अन्तर्गत किसी भी बालक का शारीरिक पक्ष सम्मिलत होता है अर्थात् किसी बालक के शरीर की ऊँचाई, आकार तथा भार आदि प्रक्रमों परिवर्तन देखा जाता हैं, अभिवृद्धि कहलाती है।
  फेंक महोदय के अनुसार "अभिवृद्धि cellular Multiplication अर्थात कोशकीय वृद्धि कहा हैं।
- अभिवृद्धि की प्रक्रिया में शारीरिक पक्ष में लम्बाई, चौड़ाई भार इत्यादि सम्मिलित होते हैं।
- विकास - बालक विकास की प्रक्रिया में विकास के अन्तर्गत किसी बालक का सम्पूर्ण विकास सम्मिलित होता है।
- इस विकास की प्रक्रिया के अन्तर्गत शारीरिक, मानसिक संवेगात्मक सामाजिक आदि सभी विकास सम्मिलित होते हैं।
- इसके अतिरिक्त अप्रत्यक्ष रूप से विकास की प्रक्रिया में नैतिक, चारित्रिक तथा भावात्मक विकास इत्यादि में सम्मिलित होते हैं।
- अभिवृद्धि की प्रक्रिया में सम्मिलित शारीरिक विकास तथा विकास की प्रक्रिया में सम्मिलित शारीरिक विकास में अन्तर पाया जाता है।
- अभिवृद्धि का शारीरिक विकास केवल वृद्धि (बढना) तथा क्षय (घटना) को प्रदर्शित करता है। जबकि विकास का शारीरिक विकास वृद्धि तथा क्षय को प्रदर्शित करता है।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

# अभिवृद्धि तथा विकास में अन्तर

| अभिवृद्धि | विकास |
|---|---|
| • अभिवृद्धि किसी बालक के केवल शारीरिक पक्षों से सम्बंधित हैं । | • विकास की प्रक्रिया से शारीरिक, मानसिक, सामाजिक सभी विकास होता हैं । |
| • अभिवृद्धि की प्रक्रिया एक निश्चित समय अर्थात जन्म से लेकर एक निश्चित समय तक चलती हैं | • विकास की प्रक्रिया जन्म से लेकर जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया हैं । |
| • अभिवृद्धि की प्रक्रिया एकाकी होती हैं । | • विकास की प्रकिया का दृष्टिकोण सर्वागीण होता हैं । |
| • अभिवद्धि परिमाणात्मक रूप को परिवर्तित करती हैं । | • विकास की प्रक्रिया बालक के गुणात्मक रूप को व्यक्त करती हैं । |
| • अभिवृद्धि की प्रक्रिया को प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है । | • विकास की प्रक्रिया को प्रत्यक्ष रूप से देखा नही जा सकता हैं । |
| • अभिवृद्धि की प्रक्रिया को मापा – तौला जा सकता हैं । | • विकास की प्रक्रिया को मापा तौला नही जा सकता हैं । |
| • अभिवृद्धि का घटक जन्म जात होता हैं । | • विकास का घटक अर्जित होता हैं । |
| • अभिवृद्धि की प्रक्रिया विकास के अंतर्गत सम्मिलित होती हैं । | • विकास की प्रक्रिया अभिवृद्धि के अंतर्गत सम्मिलित नही होती हैं । |

## विकास के सिद्धान्त

1. शारीरिक विकास
2. मानसिक विकास
3. सामाजिक विकास
4. संवेगिक विकास

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO FREE SAMPLE

5. नैतिक विकास

6. चारित्रिक विकास

7. भावात्मक विकास

**1. निरन्तर विकास का सिद्धांत**

विकास की विभिन्न गति का .....................

**नोट** – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है । इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा । यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद ।

**संपर्क करें –9694804063,9887809083,8233195718, 8504091672,**

FREE SAMPLE

- **शारीरिक विकास शैश्वावस्था में –**

1. शैश्वावस्था अंग्रेजी भाषा के in fancy शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। यह शब्द लैटिन भाषा के Infast से बना है। जो Jn + Fast से तात्पर्य है नहीं बोलने की अवस्था कहा जाता है। इस समय में बालक ज्यादातर रोने का कार्य करता है। जो निरर्थक माना जाता है।
2. शैश्वावस्था मानव विकास की आधारशिला एवं नीव तैयार होती है। इस काल को जीवन का आधार काल अथवा जीवन का आदर्श काल कहा जाता है।
3. शैश्वावस्था के काल में बालक/बालिका में संचय की प्रवृत्ति पायी जाती है। जिस कारण इसे जीवन का संचयी काल कहा जाता हैं।
4. इसका समय जन्म - 6 वर्ष तक होता हैं । जिसमें किसी भी बालक का शारीरिक विकास अन्य विकास की अपेक्षा तीव्र होता हैं ।

**भार (Weight)**

शैश्वावस्था में जन्म से लेकर अंतिम अवस्था अर्थात 6 वर्ष की आयु तक बालको का भार बालिकाओ की अपेक्षा अधिक हो जाता हैं ।

**लम्बाई** - जन्म के समय किसी बालक की लम्बाई $20\frac{1}{2}$ इंच तथा बालिकाओ की लम्बाई 20 इंच के आसपास होती है। किन्तु दोनों की .............................

**नोट** – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान _वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

**संपर्क करें –9694804063, 8504091672,8233195718, 9887809083**

FREE SAMPLE

# अध्याय – 6

## बालकों में चिंतन (Thinking)

= चिंतन एक मानसिक प्रक्रिया है जो सभी प्राणियों में होती है।

= चिंतन एक उच्च ज्ञानात्मक प्रक्रिया है।

= चिंतन एक अव्यक्त मानसिक प्रक्रिया है।

= चिंतन प्रक्रिया की शुरुआत उस समय होती है जब प्राणी के समक्ष कोई समस्या आती है अर्थात चिंतन एक मध्यस्थ प्रक्रिया है :-

उद्दीपक - चिंतन - अनुक्रिया

= चिंतन में अभिप्रेरणा का विशेष महत्व है।

= चिंतन में गत अनुभूति भी सम्मिलित होती है।

= चिंतन स्थूल से सूक्ष्म की ओर होता है।

= चिंतन में विश्लेषण एवं संश्लेषण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

= चिंतन अत्यंत जटिल प्रक्रिया है।

= चिंतन के द्वारा एक विशेष प्रकार की बुद्धि उत्पन्न होती है। जिसे कृत्रिम बुद्धि कहते हैं।

कॉलसनिक के अनुसार "संकल्पनाओं का पुनर्गठन ही चिंतन है"

**क्रो एवं क्रो** - " किसी बालक में चिंतन की योग्यता उसके सफल जीवन का मूलभूत आधार है।"

**रॉस के अनुसार** - " चिंतन ज्ञानात्मक पक्ष की एक मानसिक क्रिया है।"

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO FREE SAMPLE

## चिंतन के प्रकार

1. प्रत्यक्षात्मक एवं मूर्त चिंतन - बालक में सर्वप्रथम प्रत्यक्षात्मक चिंतन का विकास प्रारंभ होता है जब बालक किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना के प्रत्यक्षीकरण से विचार-विमर्श करता है तो ......................

**नोट** – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान _वरिष्ठ (senior) कंप्यूटर अनुदेशक"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

**संपर्क करें –9694804063, 8233195718, 8504091672,9887809083**

**प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम -**

| EXAM (परीक्षा) | DATE | हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न |
|---|---|---|
| RAS PRE. 2021 | 27 अक्तूबर | 74 (cut off- 64) |

FREE SAMPLE

# अध्याय – II

# राष्ट्रीय पाठचर्या संरचना – 2005 (एन. सी. एफ. - 2005)

**एन. सी. एफ. - 2005 :-**

**परिचय :-** यह विद्यालय शिक्षा पर अब तक का नवीनतम राष्ट्रीय दस्तावेज है। जिसे राष्ट्रीय स्तर पर के शिक्षाविदों, वैज्ञानिकों, विषय विशेषज्ञ**ओं** व अध्यापकों नें मिल कर तैयार किया है।

भारत सरकार के एम. एच. आर.डी. की पहल पर प्रो. यशपाल की अध्यक्षता में देश के चुने हुये 23 विद्वानों ने विद्यालयी शिक्षा पर हुये पिछले सभी विचार - विमर्शों का अध्ययन किया और उन्हें नई राष्ट्रीय चुनौतियों की रोशनी में देखा। इस राष्ट्रीय मशवरे से निकले 3 क्षेत्रों पर बाहर से 13 सदस्यों वाले 21 फोकस समूहों ने विचार किया और एन. सी. एफ. - 2005 को आकार दिया।

एन. सी. एफ. - 2005 दस्तावेज निम्नलिखित 5 मार्गदर्शन सिद्धांत प्रस्तुत करता है :-

- ज्ञान को स्कूल के बाहरी जीवन से जोड़ना।
- पढ़ने की रटन्त प्रणाली से मुक्त करना।
- पाठचर्या को इस तरह आगे बढ़ाना कि वह बच्चों के चहुँमुखी विकास के अवसर दें, न कि पाठ्यपुस्तक केन्द्रित बनकर रह जाये।
- परीक्षा को पहले की तुलना में अधिक लचीला बनाना और उसे कक्षा - कक्ष की गतिविधि से जोड़ना।
- बच्चों का ऐसे नागरिकों के रूप में विकास जिनमें प्रजातान्त्रिक व्यवस्था के अंतर्गत राष्ट्रीय मूल्यों (लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षताव समानता) में आस्था हो।

**अन्य प्रमुख विशेषताएं :-**

- सीखना अपने आप में एक सक्रिय व सामाजिक गतिविधि है। सीखने सिखाने में निम्नलिखित सिद्धांतों पर बल देने की जरूरत है :- " ज्ञात से अज्ञात", "मूर्त से अमूर्त", "स्थानिक से वैश्विक की ओर।"
- सीखने की एक उचित गति होनी चाहिए इसमें बच्चों के दिल दिमाग़ को रौन्दने वाली तेजी नहीं होनी चाहिए। ऐसा नहीं होना चाहिए कि बच्चे अवधारणाओं को रटकर परीक्षा करें और फिर उन्हें भूल जायें सीखने में विविधता और चुनौतियां होनी चाहिए ताकि वे बच्चों को रोचक लगे और उन्हें व्यस्त रखें।
- शिक्षा सार्थक तभी है जब व्यक्ति को इतना समर्थ बना सके कि वह शान्ति को जीवन शैली के रूप में चुन सके लेकिन वह सामाजिक संघर्षों का एक मूक दर्शक बन कर न रह जाये।
- सूचना को ज्ञान मानने से बचना चाहिए।
- स्कूलों में पढाई तब तक आनंददायक नहीं हो सकती जब तक बच्चों के प्रति हम अपना यह नजरिया न बदलें के वे मात्र ज्ञान लेने वाले हैं।
- मोटे पाठ्यक्रम मोटी किताबें शिक्षा प्रणाली की असफलता का प्रतीक है। इन्हें बनाने और लिखने वाले इस धारणा से प्रेरित हैं कि दुनिया में ज्ञान का एक विस्फोट हुआ है।
- लोकतंत्र, समानता, न्याय, स्वतंत्रता, परोपकार, धर्मनिरपेक्षता, मानवीय गरिमा व मानव अधिकार हमारे सामाजिक मूल्य हैं इन्हें उपदेश देकर नहीं बल्कि वातावरण देकर बच्चों के मन में बोने की जरूरत है।
- बाल केंद्रित शिक्षा का अर्थ बच्चों के अनुभवों, उनके स्वरों और उनकी सक्रिय सहभागिता को प्राथमिकता देना है।

बच्चे उसी वातावरण में सीख ..........................

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO